04- कुछ चेहरे, कुछ यादें (रेखाचित्र)

05- कला शिक्षा और खुद के अभिव्यक्ति पर संवाद

A Daily News Magazine

भोपाल

रविवार, 25 अगस्त, 2024

06-धर्म परिवर्तन का दबाव बनाने वाली महिला के खिलाफ...

07- विवादों में क्यों रही इंदिरा गांधी पर बनी फ़िल्में!

भोपाल एवं इंदौर से एक साथ प्रकाशित

वर्ष 21 अंक 347 नगर संस्करण, पृष्ठ -8, मूल्य रू.- 2 (डाक पंजीयन संख्याः म.प्र./भोपाल/4-391/2018-20)

सुबह सवेरे

subahsaverenews@gmailÐcom

facebookÐcom/subahsaverenews

wwwÐsubahsavereÐnews

twitterÐcom/subahsaverenews

उमड़ घुमड़ घिर आयो री सजनी बदरा.. . राज समंद झील की शाम

फोटो- पंकज शर्मा

केंद्र सरकार ने यूनिफाइड पेंशन स्कीम को मंजूरी दी

23 लाख केंद्रीय कर्मचारियों को फायदा यह एक अप्रैल 2025 से लागू होगी

नई दिल्ली (एजेंसी)। सरकार ने नई पेंशन स्कीम (एनपीएस) की जगह अब सरकारी कर्मियों के लिए यूनिफाइड पेंशन स्कीम (पीएस) यानी एकीकृत पेंशन योजना लॉन्च करने का फैसला किया। केंद्रीय कैबिनेट की बैठक में इसे लेकर सहमति बनी है। केंद्रीय मंत्री अश्विनी वैष्णव ने बताया, पीएस एक अप्रैल 2025 से लागू होगी। इसका फायदा 23 लाख केंद्रीय कर्मचारियों को

होगा। उन्होंने बताया कि कर्मचारियों को कॉन्ट्रिब्यूट करने की जरूरत नहीं होगी सरकार अपनी तरफ से कर्मचारी की बेसिक सैलरी का साढ़े 18 प्रतिशत कॉन्ट्रिब्यूट करेगी। न्यू पेंशन स्कीम में कर्मचारी को 10प्रतिशत अपनी बेसिक सैलरी का कॉन्ट्रिब्यूट करना होता है। सरकार 14प्रतिशत देती है।

बैठक में पीएम शामिल हुए-प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने केंद्रीय कर्मचारियों के नेताओं के साथ अपने आवास पर बैठक की।

उद्योगों को दक्ष मानव संसाधन मुहैया करवाने की प्रमुख संस्था बने क्रिस्प : मुख्यमंत्री

वृहद स्तर पर प्रशिक्षण के समयबद्ध कार्यक्रम किए जाएं निर्धारित

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि सेंटर फॉर रिसर्च एंड इंडस्ट्रियल स्टाफ परफॉरमेंस (क्रिस्प) द्वारा प्रदेश में स्थापित हो रही नई औद्योगिक इकाइयों की आवश्यकता के अनुसार बहुमुखी प्रशिक्षण कार्यक्रम संचालित किए जाएं। ये प्रशिक्षण कार्यक्रम रोजगार परक हों। इन प्रशिक्षण कार्यक्रमों का लाभ इंजीनियरिंग कॉलेज और आई.टी.आई के विद्यार्थियों को भी मिले। क्रिस्प, उद्योगों को दक्ष मानव संसाधन मुहैया करवाने की प्रमुख संस्था बने। मुख्यमंत्री डॉ. यादव आज मुख्यमंत्री निवास स्थित समत्व भवन में क्रिस्प संस्था की साधारण सभा की बैठक को संबोधित कर रहे थे।

उच्च शिक्षा एवं तकनीकी शिक्षा मंत्री श्री इंदर सिंह परमार, सूक्ष्म,लघु और मध्यम उद्योग मंत्री श्री चेतन्य काश्यप, स्कूल शिक्षा मंत्री श्री उदय प्रताप सिंह, कौशल विकास और रोजगार राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) श्री गौतम टेटवाल भी बैठक में उपस्थित थे। पंचायत एवं ग्रामीण विकास मंत्री श्री प्रहलाद पटेल एवं अनुसूचित जाति कल्याण मंत्री श्री नागर सिंह चौहान बैठक से वर्चुअल जुड़े।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि चयनित विधाओं में क्रिस्प द्वारा ट्रेनिंग दी जाए। ऐसे कोर्स डिजाइन करें जो युवाओं के लिए उपयोगी हों। क्रिस्प एक महत्वपूर्ण संस्था है, जिसने केन्द्र और राज्य सरकार के विभागों के अमले को दक्ष बनाने में योगदान दिया है। क्रिस्प द्वारा राज्य के हित में रोजगारमूलक प्रशिक्षण कार्यक्रमों के संचालन का कार्य किया जाए। फार्मास्युटिकल, मोबाइल रिपेयरिंग सहित अनेक क्षेत्रों में आज प्रशिक्षण कार्यक्रमों की आवश्यकता है, इसकी पूर्ति क्रिस्प के माध्यम से की जानी चाहिए।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि वृहद स्तर पर प्रशिक्षण का समयबद्ध कार्यक्रम तैयार किया जाए। बैठक में सचिव तकनीकी शिक्षा श्री एम.रघुराज ने प्रेजेंटेशन में बताया कि वर्ष 1997 में भारत सरकार एवं जर्मन शासन के सहयोग से तकनीकी शिक्षा, कौशल विकास एवं रोजगार विभाग के अंतर्गत यह स्वायत संस्थान प्रारंभ हुआ। संस्थान द्वारा प्रशिक्षण, कौशल विकास, कंसलटेंसी, ट्रेनिंग कम प्रोडक्शन सेंटर, आईसीटी/सॉफ्टवेयर विकास और ई-गवर्नेंस के क्षेत्र में कार्य किए गए हैं।

नए रक्षा समझौते पर भारत और अमेरिका ने की डील

● रक्षामंत्री राजनाथ सिंह बोले-दोनों देशों को डिफेंस सेक्टर में होगा फायदा
● राजनाथ ने वैश्विक शांति और सुरक्षा के लिए एक मजबूत ताकत बताया

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारत और अमेरिका ने एक नए रक्षा समझौते पर हस्ताक्षर किए हैं। इस समझौते से दोनों देशों को एक-दूसरे की जरूरतों को पूरा करने के लिए रक्षा

उपकरणों और पुर्जों की आपूर्ति में सहायता मिलेगी। रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने इस साझेदारी को वैश्विक शांति और सुरक्षा के लिए एक मजबूत ताकत बताया है। राजनाथ सिंह ने वाशिंगटन डीसी में अमेरिकी रक्षा मंत्री लॉयड ऑस्टिन से मुलाकात की। दोनों नेताओं ने द्विपक्षीय रक्षा सहयोग, औद्योगिक सहयोग, क्षेत्रीय सुरक्षा और अन्य अंतरराष्ट्रीय मुद्दों पर व्यापक चर्चा की राजनाथ सिंह की अमेरिका यात्रा के दौरान सिक्योरिटी ऑफ सप्लाई अरेंजमेंट पर हस्ताक्षर किए गए। इस दौरान दोनों देशों ने टेक्नोलॉजी ट्रांसफर और हिंद-प्रशांत क्षेत्र में सैन्य सहयोग बढ़ाने जैसे कई अन्य पहलुओं पर भी चर्चा की। अधिकारियों के अनुसार, एसओएसए समझौते पर अमेरिका की ओर से प्रिंसिपल डिप्टी असिस्टेंट सेक्रेटरी ऑफ डिफेंस फॉर इंडस्ट्रियल बेस पॉलिसी विक रमदास और भारत की ओर से अपर सचिव और महानिदेशक (अधिग्रहण) समीर कुमार ने हस्ताक्षर किए। यह समझौता दोनों देशों को आपूर्ति श्रृंखला में आने वाली अचानक बाधाओं को दूर करने के लिए आवश्यक औद्योगिक संसाधनों को हासिल करने में सक्षम बनाएगा। यूएस-इंडिया बिजनेस काउंसिल पुशन दास ने कहा, इस समझौते से दोनों देशों के बीच रक्षा संबंधी उत्पादों के अधिग्रहण के रास्ते बढ़ेंगे। यह समझौता भले ही कानूनी रूप से बाध्यकारी न हो, लेकिन भारतीय और अमेरिकी कंपनियों के बीच क्रॉस इन्वेस्टमेंट और साझेदारी के नए रास्ते खोलेगा।

सुप्रभात

जन्म
करोड़ों शहरों
कई गुना कस्बे भवन
असंख्य अट्टालिकाएं छोड़
सिर्फ तुम्हारे घर
जन्मा वह
खुशी मनाओ
उसके जन्म पर
उत्तर में हिमालय
नदियों के तटों पर तीर्थ
मीलों लम्बा पठार
तय किया उसने
एक थकी हुई औरत की इकहरी देह
तय की उसने
अपने लिए
मवेशी बांधने से बदतर जगह
पैदा होते ही
जानलेवा बीमारियों की गिरफ्त
असंख्य अट्टालिकाएं छोड़
सिर्फ तुम्हारे घर
जन्मा वह
खुशी मनाओ
उसके जन्म पर !

-नरेंद्र गौड़

झील के रास्ते अरुणाचल प्रदेश में आएगी भारी तबाही!

ईटानगर (एजेंसी)। अरुणाचल प्रदेश से एक बड़ी खबर सामने आई है। यहां के तवांग जिले में सांगंगा नेहगु झील से आए ग्लेशियल लेक आउटबर्स्ट फ्लड (जीएलओएफ) के कारण बड़ा नुकसान हुआ है। यहां पांच से अधिक लॉग ब्रिज और ब्रोक्पा ट्रैक क्षतिग्रस्त हो गए हैं। जीएलओएफ 14 अगस्त को हुआ था और इसकी पुष्टि तवांग के उपायुक्त कान्की दरंग और पुलिस अधीक्षक डीडब्ल्यू थोंगोन की जिला आपदा प्रबंधन प्राधिकरण की एक टीम ने की। यह

● आपदा की टीम ने सर्वे में जो पाया, उसके बाद किया अलर्ट
● 16000 फीट ऊंचाई पर चीन बॉर्डर में पिघल रहा है ग्लेशियर

भी तब पता चला जब टीम झील तक गई थी। तवांग के जिला आपदा प्रबंधन प्राधिकरण के अधिकारियों की एक टीम माउंट गोरीचेन रेंज पर ग्लेशियर के पास स्थित सांगंगा नेहगु झील पर पहुंची थी। टीम ने पाया कि 14 अगस्त को सांगंगा नेहगु झील में एक ग्लेशियल झील का विस्फोट हुआ था। तवांग के डिप्टी कमिश्नर कांकी दरांग और पुलिस अधीक्षक डीडब्ल्यू थोंगन के नेतृत्व में टीम ने पाया कि उसी झील से ग्लेशियल झील विस्फोट बाढ़ की संभावना अभी भी बनी हुई है। ऐसा इसलिए हैं क्योंकि

झील के पीछे की ओर ग्लेशियर तेजी से पिघल रहा है, जिससे झील में पानी की मात्रा बढ़ रही है। ब्रोक्पा के किए गए अनुरोध का जवाब डीसी ने दिया। उन्होंने कहा, हाल ही में क्षतिग्रस्त ब्रोक्पा ट्रैक की मरम्मत और रखरखाव के लिए संयुक्त निधि से तुरंत 3 लाख रुपये मंजूर किए जाएंगे। बह गए पुलों के मामले को उच्च अधिकारियों के साथ उठाया जाएगा। तवांग जिला प्रशासन ने एक बयान में कहा कि टीम ने 20 अगस्त को जेथांग (13,200 फीट) से आगे बढ़ना शुरू किया। टीम मेराथांग (14,600 फीट) में एक रात के लिए रुकी। अगली सुबह, टीम ने चढ़ाई शुरू की।

भोपाल का तापमान

अधिकतम 36.3 °c | न्यूनतम 30°c

सुबह सवेरे

भोपाल ■ रविवार, 25 अगस्त 2024

जो अग्नि हमें गर्मी देती है , हमें नष्ट भी कर सकती है ; यह अग्नि का दोष नहीं है।

चाणक्य नीति

तेलुगु स्टार नागार्जुन के कन्वेंशन सेंटर पर चला बुलडोजर

हैदराबाद में झील की जमीन पर अवैध निर्माण का आरोप,6.69 एकड़ में बना था

हैदराबाद (एजेंसी)। हैदराबाद डिजास्टर रिस्पॉन्स एंड असेट्स मॉनिटरिंग एंड प्रोटेक्शन ने दक्षिण के फिल्म स्टार नागार्जुन के खिलाफ बुल्डोजर ऐक्शन शुरू कर दिया है। हाइड्रा ने उनके ए-कन्वेंशन सेंटर पर बुल्डोजर चलवा दिया। 10 एकड़ के प्लॉट पर बना यह कन्वेंशन सेंटर कई साल से जांच के दायरे में था। यह कन्वेंशन सेंटर मधापुर इलाके में थम्मीदिकुंता झील के बफर जोन में आता था। यह हॉल रंगारेड्डी जिले के शिल्परामम के पास है। हाइड्रा ने शनिवार सुबह बुल्डोजर ऐक्शन शुरू कर दिया। मधापुर के डीएसपी का कहना है कि मौके पर भारी पुलिस बल को भी तैनात किया गया है। नॉर्थ टैंक डिविजन के रिकॉर्ड के मुताबिक थम्मीदिकुंता झील आक एफटीएल क्षेत्र लगभग 29 एकड़ का है और यह कन्वेंशन हॉल लगभग दो एकड़ बफर जोन के अंतरगत आता है। आरोप है कि अपने प्रभाव का दुरुपयोग करके ग्रेटर हैदराबाद नगर निगम को इस कन्वेंशन हॉल पर कार्रवाई करने से रोक दिया गया था। शिकायत करने वाले भास्कर रेड्डी ने हाइड्रा के अधिकारियों से ऐक्शन लेकर झील को बहाल करने की मांग की थी। एन कन्वेंशन सेंटर को गिराने के दौरान उस तरफ को जाने वाले रास्तों को भी सील कर दिया गया। बता दें कि फिल्म इंडस्ट्री के अलावा अन्य क्षेत्रों में भी नागार्जुन का काफी प्रभाव है।

केजरीवाल के खिलाफ सीबीआई को मिला अब एलजी का साथ

नई दिल्ली (एजेंसी)। दिल्ली शराब नीति मामले में मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल की मुश्किलें कम होने का नाम नहीं ले रही हैं। कथित शराब घोटाले मामले में अरविंद केजरीवाल के खिलाफ मुकदमा चलाने के लिए सीबीआई ने दिल्ली के उपराज्यपाल वीके सक्सेना से मंजूरी ले ली है।

सीबीआई ने विशेष न्यायाधीश कावेरी बावेजा की राउज एवेन्यू अदालत में शुक्रवार को अभियोजन मंजूरी जमा कर दी है। अब मामले की अगली सुनवाई 27 अगस्त को होगी। एक बार जब अदालत सीबीआई की सप्लीमेंट्री चार्जशीट पर संज्ञान ले लेती है, जिसमें केजरीवाल को आरोपी के रूप में नामित किया गया है, तो केजरीवाल के खिलाफ आरोप तय किए जाएंगे। शराब नीति से जुड़े कथित मनी लॉन्ड्रिंग मामले में ईडी द्वारा गिरफ्तारी के बाद वह मार्च से न्यायिक हिरासत में हैं।

शेख हसीना के हटते ही बांग्लादेश भी अब दिखाने लगा अपना तेवर !

बीएसएफ को केटल फेंसिंग से रोका, हफ्ते भर में दूसरी बार टेंशन

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारत और बांग्लादेश सीमा पर तनाव बढ़ता नजर आ रहा है। बांग्लादेश ने भारत को सीमा पर फेंसिंग से रोक दिया है। यह मामला कूचबिहार स्थित सीमाक्षेत्र का है, जहां जानवरों को रोकने के लिए मवेशी बाड़ बनाई जा रही थी। गुरुवार को बॉर्डर गार्ड्स बांग्लादेश (बीजीबी) ने बॉर्डर सिक्योरिटी फोर्स (बीएसएफ) को ऐसा करने से रोका। मामले की जानकारी रखने वालों ने बताया कि इस दौरान कोई हिंसा नहीं हुई। हालांकि निर्माण कार्य को रोक दिया गया है। इसके अलावा एहतियात के तौर पर गश्त भी बढ़ा दी गई है। अब इस मामले को अक्टूबर में दोनों देशों के सैन्य बलों के बीच होने वाली मीटिंग के दौरान उठाया जाएगा। गौरतलब है कि ढाका में शेख हसीना के इस्तीफा देकर भारत भागने और उसके बाद वहां सत्ता में हुई उठापटक के बीच दोनों देशों के संबंध सामान्य नहीं रह गए हैं। बांग्लादेश में हिंदुओं पर हो रही हिंसा के चलते कुछ लोग भारत में आने का रास्ता तलाश रहे हैं। मामले की जानकारी रखने वाले बीएसएफ के एक अधिकारी ने कहा कि हमारे जवान केटल फेंस बना रहे थे। इसी दौरान बीजीबी के जवान आए और उन्होंने आपत्ति जताई। अधिकारी ने बताया कि यह बॉर्डर फेंस नहीं थी।

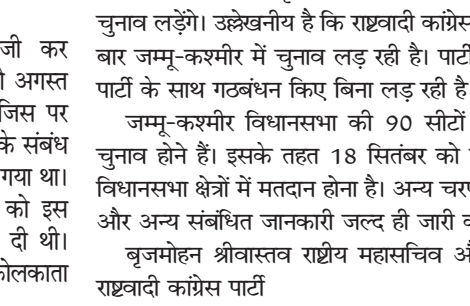

इजरायल पड़ रहा भारी, सीधा नहीं भिड़ पा रहा हमास

- अब विदेशों में बैठे निहत्थे इजरायलियों को बनाएगा निशाना
- हानिया की मौत का बदला लेने की है तैयारी, बना रहा प्लान

तेल अवीव (एजेंसी)। ईरान में हमास चीफ इस्माइल हानिया की हत्या कर दी गई थी। इस हत्या के लिए हमास और ईरान इजरायल पर आरोप लगाते हैं। हमास इजरायल से इसका सीधा बदला नहीं ले सकता है। इसलिए अब हमास ने हानिया की हत्या का जवाब देने के लिए नया प्लान बनाया है। चैनल-12 ने फिलिस्तीनी सूत्रों का हवाला देते हुए गुरुवार को बताया कि हमास ने विदेशों में इजरायलियों के खिलाफ हमले करने का निर्णय लिया है। रिपोर्ट में कहा गया है कि पिछले महीने तेहरान में हानिया की हत्या के ठीक दो दिन बाद हमास की ओर से रणनीति में बदलाव किया गया था। रणनीति में बदलाव इसलिए लिया गया है क्योंकि पिछले 10 महीने से चल रहे युद्ध के कारण हमास काफी हद तक कमजोर हो गया है। उसके पास इजरायल पर सीधा हमला करने की क्षमता नहीं है। न्यूज नेटवर्क ने इस बात की पुष्टि नहीं की है कि हत्या करने से जुड़ा अभियान आम इजरायली नागरिकों के खिलाफ चलाया जाएगा या अधिकारियों को निशाना बनाया जाएगा। पिछले साल 7 अक्टूबर को हमास ने इजरायल में हमला किया था, जिसके बाद गाजा का संघर्ष शुरू हो गया है। हानिया की मौत के तीन सप्ताह बाद भी ईरान इजरायल के खिलाफ जवाबी कार्रवाई की कसम खा रहा है लेकिन उसने भी अब तक किसी भी तरह का जवाबी हमला नहीं किया है। हानिया की मौत की इजरायल ने न तो जिम्मेदारी ली है और न ही इससे इनकार किया है।

जल्द सामने आएगा कोलकाता डॉक्टर रेप-मर्डर केस का सच

आरोपियों का 'पॉलीग्राफ टेस्ट' शुरू, मुख्य आरोपी संजय से जेल में सवाल-जवाब

कोलकाता (एजेंसी)। कोलकाता के आरजी कर मेडिकल कॉलेज में ट्रेनी डॉक्टर के रेप और मर्डर केस में पॉलीग्राफ टेस्ट शनिवार को शुरू हो गया। अधिकारियों ने इस बात की जानकारी दी है। ट्रेनी डॉक्टर के रेप और मर्डर केस में मुख्य आरोपी समेत छह अन्य का पॉलीग्राफ टेस्ट होना है। इस टेस्ट के दौरान व्यक्ति द्वारा सवालों के जवाब दिए जाते समय एक मशीन की मदद से उसकी शारीरिक प्रतिक्रियाओं को मापा जाता है।

इससे यह पता लगाया जाता है कि वह सच बोल रहा है या झूठ। अधिकारियों ने बताया कि मुख्य आरोपी संजय रॉय का 'पॉलीग्राफ टेस्ट' उस जेल में ही किया जाएगा जहां वह बंद है, जबकि पूर्व प्राचार्य संदीप घोष, घटना की रात ड्यूटी पर मौजूद चार चिकित्सकों और एक नागरिक स्वयंसेवक समेत छह अन्य का 'पॉलीग्राफ टेस्ट' एजेंसी के ऑफिस में किया जाएगा। अधिकारियों के मुताबिक दिल्ली के केंद्रीय फॉरेंसिक विज्ञान प्रयोगशाला (सीएफएसएल) से 'पॉलीग्राफ' विशेषज्ञों का एक दल कोलकाता पहुंच गया है। सीबीआई ने गुरुवार को सुप्रीम कोर्ट से कहा था कि स्थानीय पुलिस ने ट्रेनी डॉक्टर से रेप और मर्डर केस दबाने का प्रयास किया था। जब तक सीबीआई ने जांच अपने हाथ में ली, तब तक अपराध स्थल से छेड़छाड़ की जा चुकी थी। हत्या की घटना के खिलाफ देश भर में व्यापक विरोध प्रदर्शन हो रहे हैं।

कोलकाता के सरकारी आरजी कर मेडिकल कॉलेज एवं अस्पताल में नौ अगस्त को चिकित्सक का शव मिला था, जिस पर गंभीर चोटों के निशान थे। इस घटना के संबंध में रॉय को अगले दिन गिरफ्तार किया गया था। कलकत्ता हाई कोर्ट ने 13 अगस्त को इस मामले की जांच सीबीआई को सौंप दी थी। इसके अगले दिन सीबीआई ने जांच कोलकाता पुलिस से अपने हाथ में ले ली।

राकांपा प्रत्याशियों की सूची जारी

भोपाल। राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी ने जम्मू-कश्मीर विधानसभा चुनाव के पहले चरण के लिए उम्मीदवारों की घोषणा की राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी (एनसीपी) ने जम्मू-कश्मीर विधानसभा चुनाव 2024 के पहले चरण के लिए अपने उम्मीदवारों की सूची जारी कर दी है। यह जानकारी राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी के राष्ट्रीय महासचिव और जम्मू-कश्मीर के प्रभारी श्री बृजमोहन श्रीवास्तव ने दी है। श्री श्रीवास्तव ने बताया कि पार्टी के संसदीय बोर्ड ने पुलवामा जिले में चुनाव लड़ने के लिए तीन उम्मीदवारों के नामों को अपनी मंजूरी दे दी है, जो इस प्रकार हैं– 1. 33 - त्राल - मोहम्मद यूसुफ हजाम 2. 34 - पुलवामा - श्री इश्तियाक अहमद शेख 3. 35 - राजपुरा - अरुण कुमार रैना ये सभी उम्मीदवार राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी के अधिकृत उम्मीदवार के रूप में घड़ी चुनाव चिन्ह पर चुनाव लड़ेंगे। उल्लेखनीय है कि राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी (एनसीपी) पहली बार जम्मू-कश्मीर में चुनाव लड़ रही है। पार्टी यह चुनाव किसी अन्य पार्टी के साथ गठबंधन किए बिना लड़ रही है।

जम्मू-कश्मीर विधानसभा की 90 सीटों के लिए तीन चरणों में चुनाव होने हैं। इसके तहत 18 सितंबर को पहले चरण में कुल 24 विधानसभा क्षेत्रों में मतदान होना है। अन्य चरणों के उम्मीदवारों के नाम और अन्य संबंधित जानकारी जल्द ही जारी की जाएगी।

बृजमोहन श्रीवास्तव राष्ट्रीय महासचिव और प्रभारी, जम्मू-कश्मीर राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी

पहला रियूजेबल भारतीय हाईब्रिड रॉकेट आरएचयूएमआई-1 लॉन्च

53 सैटेलाइट सबऑर्बिटल में भेजे गए, ग्लोबल वार्मिंग और क्लाइमेट चेंज के रिसर्च में मिलेगी मदद

चेन्नई (एजेंसी)। भारत ने शनिवार को अपना पहला रियूजेबल हाइब्रिड रॉकेट रूमी 1 लॉन्च किया। चेन्नई के थिरुविदंधई से मोबाइल लॉन्चर के जरिए रॉकेट की लॉन्चिंग हुई। रॉकेट को तमिलनाडु बेस्ड स्टार्टअप स्पेस जोन इंडिया और मार्टिन ग्रुप ने मिलकर बनाया है। हाइब्रिड रॉकेट रूमी 1 के जरिए 3 क्यूब सैटेलाइट और 50 सैटेलाइट को सबऑर्बिटल ट्रैजेक्टरी में भेजा गया। ये सैटेलाइट ग्लोबल वार्मिंग और क्लाइमेट चेंज से जुड़े रिसर्च के लिए डेटा इकट्ठा करेंगे। रूमी 1 रॉकेट जेनेरिक फ्यूल बेस्ड हाइब्रिड मोटर और इलेक्ट्रिकली ट्रिगर पैराशूट सिस्टम से लैस है।

आपका बड़ा असर, पुतिन को आप ही रोक सकते हैं

भारत को लेकर बड़ी बात बोल गए राष्ट्रपति जेलेंस्की

कीव (एजेंसी)। यूक्रेन के राष्ट्रपति वलोडिमिर जेलेंस्की ने रूस-यूक्रेन युद्ध को समाप्त करने में भारत की भूमिका पर बड़ा बयान दिया है। राजधानी कीव में उन्होंने कहा, भारत अपनी भूमिका निभाएगा। मुझे लगता है कि भारत ने यह पहचानना शुरू कर दिया है कि यह सिर्फ युद्ध नहीं है। यह एक व्यक्ति पुतिन का

एक पूरे देश (यूक्रेन) के खिलाफ असली युद्ध है। उन्होंने कहा कि आप (भारत) एक बड़े देश हैं। आपका प्रभाव बहुत बड़ा है। आप पुतिन को रोक सकते हैं और उनकी अर्थव्यवस्था को रोक सकते हैं। उन्हें वास्तव में उनकी जगह पर ला सकते हैं। मालूम हो कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी यूक्रेन दौरे पर हैं और जेलेंस्की का बयान उनसे मुलाकात के बाद आया है। पीएम मोदी के साथ अपनी मीटिंग पर यूक्रेनी राष्ट्रपति ने कहा, बहुत अच्छी बैठक हुई। यह एक ऐतिहासिक मीटिंग रही। मैं प्रधानमंत्री के आने के लिए उनका बहुत आभारी हूं। यह कुछ व्यावहारिक कदमों के साथ अच्छी शुरुआत है। अगर उनके (प्रधानमंत्री मोदी) पास (शांति पर) कोई विचार है तो हमें इस पर बात करने में खुशी होगी। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री मोदी पुतिन से ज्यादा शांति चाहते हैं। समस्या यह है कि पुतिन इसे नहीं चाहते। मुझे नहीं पता कि जब उनकी बैठक हुई थी तो उन्होंने क्या बात की। वलोडिमिर जेलेंस्की ने कहा, अगर प्रधानमंत्री की आधिकारिक यात्रा के दौरान आप अस्पताल में बच्चों पर हमला करते हैं तो उन्हें यह पहचानना होगा। यह समझना होगा कि वे (रूसी राष्ट्रपति) भारत का सम्मान नहीं करते हैं या अपनी सेना को नियंत्रित नहीं करते हैं। इसका मतलब है कि वे भारतीय प्रधानमंत्री का सम्मान नहीं करते हैं।

मुंबई से हैदराबाद जा रहा हेलीकॉप्टर पुणे में क्रैश

4 लोग हो गए घायल, कैप्टन अस्पताल में हुआ भर्ती

मुंबई (एजेंसी)। महाराष्ट्र में पुणे जिले के पौड गांव के पास एक हेलीकॉप्टर शनिवार को दुर्घटनाग्रस्त हो गया। इसमें चार लोग सवार थे। बताया जा रहा है कि कैप्टन को चोटें आई हैं और उन्हें अस्पताल में भर्ती कराया गया है। बाकी तीन लोगों की हालत स्थिर है। पुणे ग्रामीण पुलिस के एसपी पंकज देशमुख ने बताया कि यह हेलीकॉप्टर निजी विमानन कंपनी का था। घटना के वक्त यह मुंबई से हैदराबाद के लिए जा रहा था। न्यूज एजेंसी ने हादसे की कुछ तस्वीरें जारी की हैं जिनमें दुर्घटनाग्रस्त विमान को देखा जा सकता है। हेलीकॉप्टर के परखच्चे निकल गए हैं। मौके पर कई सारे लोग भी नजर आ रहे हैं। रिपोर्ट के मुताबिक, हादसे का शिकार हुआ हेलीकॉप्टर ग्लोबल वेक्टरा कंपनी का था।

इसरो ने रिलीज किया चंद्रयान-3 मिशन का डेटा

खुलेंगे चांद के राज, दुनियाभर के वैज्ञानिकों को होगा फायदा

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संस्थान (इसरो) ने भारत के चंद्रयान-3 मिशन की सफलता की पहली वर्षगांठ पर शुक्रवार को मिशन से संबंधित वैज्ञानिक डेटा को विश्लेषण के वास्ते दुनियाभर के अनुसंधानकर्ताओं के लिए सार्वजनिक कर दिया। एजेंसी ने विक्रम लैंडर और प्रज्ञान रोवर पर लगे पांच पेलोड से हासिल 55 गीगाबाइट (जीबी) से अधिक डेटा सार्वजनिक किया है। पिछले साल 23 अगस्त को चंद्रयान-3 मिशन के चंद्रमा के दक्षिणी क्षेत्र पर उतरने के साथ ही भारत ने इतिहास रच दिया था। इसरो के प्रमुख एसएस सोमनाथ ने यहां राष्ट्रीय अंतरिक्ष दिवस समारोह में कहा,यह डेटा उन वैज्ञानिकों तक ही सीमित नहीं रहेगा जिन्होंने उन उपकरणों को बनाया था।

प्रीमियर ऑर्चर्ड सोसाइटी में श्री कृष्ण की लीलाओं का उत्सव मनाया

भोपाल। करोंद रोड स्थित प्रीमियर ऑर्चर्ड सोसाइटी में श्री कृष्ण जन्माष्टमी के शुभ अवसर

पर कॉलोनी के बच्चों संग माँ यशोदा और कान्हा ने नटखट अंदाज़ में उत्साह मनाया। इस अवसर पर श्रीमती रानू शिवहरे एवं श्रीमती प्रियंका बाजपेई द्वारा कान्हा एवं माँ यशोदा की झांकी एवं सजावट की गई । माँ यशोदा का किरदार सुश्री रिशिका शिवहरे एवं नटखट कान्हा का किरदार प्रत्यक्षा बाजपेई द्वारा निभाया गया, दोनों के साथ रहवासियों ने बड़ी धूम धाम से उत्साह मनाया।

असम गैंगरेप के मुख्य आरोपी की डूबने से मौत

- कस्टडी से भागकर तालाब में कूदा, सुबह साढ़े 3 बजे क्राइम सीन पर लेकर जा रही थी पुलिस

गुवाहाटी (एजेंसी)। असम के नगांव जिले में 14 साल की नाबालिग से गैंगरेप के मुख्य आरोपी तफजुल इस्लाम की शनिवार को डूबने से मौत हो गई। वह पुलिस हिरासत से भागने के दौरान तालाब में कूद गया था। नगांव के सुपरिटेंडेंट ऑफ पुलिस स्वप्ननील डेका ने बताया कि आरोपी को शुक्रवार को गिरफ्तार किया गया था। आज सुबह 3.30 बजे उसे घटनास्थल पर क्राइम सीन रिक्रिएट करने के लिए लेकर जा रहे थे। एसपी के मुताबिक, आरोपी ने एक पुलिसकर्मी पर हमला किया और हिरासत से भागकर तालाब में कूद गया। पुलिसकर्मी भी घायल हो गया और उसे अस्पताल में भर्ती कराया गया। पुलिस ने तुरंत सर्च ऑपरेशन शुरू किया। मौके पर एसडीआरएफ की टीम भी पहुंची। लगभग दो घंटे तलाश के बाद आरोपी का शव तालाब से बरामद किया गया। मृतक आरोपी के गांव बोरभेटी में लोगों ने उसके अंतिम संस्कार में भाग नहीं लेने का फैसला किया है।

सितंबर महीने में भोपाल एक्सप्रेस 10 दिन के लिए कैंसिल

वंदे भारत भी 17 को निरस्त, रोजाना 4 हजार से अधिक पैसेंजर्स करते हैं सफर

भोपाल (नप्र)। सितंबर महीने में वंदे भारत और भोपाल एक्सप्रेस से दिल्ली या ग्वालियर, झांसी आगरा सफर करने जा रहे हैं, तो यह खबर आपके लिए है, क्योंकि पलवल रेलवे स्टेशन पर मेंटेनेंस कार्य किए जाने हैं। इसके चलते भोपाल मंडल से होकर गुजरने वाली वंदे भारत के अलावा भोपाल एक्सप्रेस अप और डाउन को निरस्त किया गया है। बता दें कि दोंनो ट्रेनों से भोपाल रेल मंडल के चार हजार से अधिक यात्री रोजाना यात्रा करते हैं। इनमें भोपाल एक्सप्रेस 6 सितंबर से 15 सितंबर तक 10 दिन के लिए कैंसिल की गई है।

ये ट्रेनें कैंसिल की गईं

- 12155 रानी कमलापति - निजामुद्दीन एक्सप्रेस अपने प्रारंभिक स्टेशन से 6, 07, 08, 09, 10, 11, 12, 13, 14 और 15 सितंबर को निरस्त रहेगी।
- 12156 (निजामुद्दीन - रानी कमलापति एक्सप्रेस) अपने प्रारंभिक स्टेशन से 6, 07, 08, 09, 10, 11, 12, 13, 14 और 15 सितंबर को निरस्त रहेगी।
- 20171 रानी कमलापति - निजामुद्दीन वंदे भारत एक्सप्रेस अपने प्रारंभिक स्टेशन से 17 सितंबर को निरस्त रहेगी।
- 20172 निजामुद्दीन - रानी कमलापति वंदे भारत एक्सप्रेस प्रारंभिक स्टेशन से 17 सितंबर को निरस्त रहेगी।

यह ट्रेन आगरा पर होगी खत्म

- 12192 जबलपुर - निजामुद्दीन श्रीधाम सुपरफास्ट एक्सप्रेस 5 से 16 सितंबर तक आगरा कैंट स्टेशन तक ही जाएगी।
- 12191 निजामुद्दीन- जबलपुर श्रीधाम सुपरफास्ट एक्सप्रेस 6 से 17 सितंबर तक आगरा कैंट स्टेशन से प्रारंभ होगी।

इस ट्रेन का रूट किया परिवर्तित

12191 निजामुद्दीन - जबलपुर सुपरफास्ट एक्सप्रेस 29, 30, 31 अक्टूबर, 01, 02, 03, 04, 05 को परिवर्तित मार्ग वाया गाजियाबाद-मथुरा-आगरा कैंट होकर जाएगी। भोपाल रेल मंडल के अधिकारियों ने बताया कि यात्री असुविधा से बचने के लिए रेलवे द्वारा अधिकृत रेलवे पूछताछ सेवा एनटीईएस /139 रेल मदद से गाड़ी की सही स्थिति की जानकारी पता करके यात्रा करें।

पीएचक्यू में कम्प्लेन के बाद बोले पीसीसी चीफ पटवारी

दहशत बनाकर अधिकारी, कर्मचारी बीजेपी के एजेंडे पर काम कर रहे हैं, सर्विस रूल्स भूल गए

भोपाल (नप्र)। पुलिस मुख्यालय में छतरपुर की घटना के बाद कार्रवाई को लेकर पीसीसी चीफ जीतू पटवारी, नेता प्रतिपक्ष उमंग सिंघार, विधायक आरिफ मसूद, कांग्रेस नेता मुकेश नायक, पीसी शर्मा, विभा पटेल ने शिकायत दर्ज कराई।

प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष जीतू पटवारी ने कहा है कि दहशत बनाकर अधिकारी कर्मचारी बीजेपी के एजेंडे पर काम कर रहे हैं। वे अपनी आदतें सुधारें अन्यथा मानव अधिकार आयोग में जाएंगे और सुप्रीम कोर्ट में याचिका लगाएंगे। पटवारी ने कहा कि पुलिस को सजग होना चाहिए और बीजेपी के एजेंडे पर काम करने से बचना चाहिए। नेता प्रतिपक्ष उमंग सिंघार,

विधायक आरिफ मसूद, प्रदेश कांग्रेस उपाध्यक्ष जेपी धनोपिया और अन्य नेताओं की मौजूदगी में पीसीसी चीफ पटवारी ने ये बातें डीजीपी सुधीर सक्सेना से मुलाकात के बाद मीडिया से कहीं। पटवारी शनिवार को पुलिस मुख्यालय डीजीपी से शिकायत करने पहुंचे थे। प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष पटवारी ने कहा कि सर्विस रूल का पालन करना पुलिस और जिला प्रशासन भूल गया है। शांति की बात कहकर दहशत फैलाना अच्छी सरकार की नीति नहीं है। उन्होंने छतरपुर की घटना का जिक्र कर कहा कि अपराधी को पकड़ना चाहिए। जो सजा हो, उसे संवैधानिक व्यवस्था के आधार पर सजा बी देना चाहिए। कांग्रेस ने कभी इसका विरोध नहीं किया। छतरपुर की घटना के मामले में जो अपराधी हैं उनके विरुद्ध कार्यवाही करना चाहिए लेकिन न्यायपालिका, संविधान के नियमों का उल्लंघन नहीं होना चाहिए। पटवारी ने सवाल उठाया कि क्या कारण है कि उज्जैन में जायसवाल का घर गिराया, मुरैना में यादव का घर गिराया। एमपी में सैकड़ों घर गिरा दिए गए। उन्होंने कहा कि दहशत बनाकर अधिकारी कर्मचारी बीजेपी के एजेंडे पर काम कर रहे हैं। ये आदत सुधारें तो ठीक है अन्यथा मानव अधिकार आयोग जाएंगे, सुप्रीम कोर्ट में याचिका लगाएंगे। पटवारी ने कहा कि जब घटना होनी थी तो छतरपुर का पुलिस इंटेलिजेंस क्या कर रहा था, यह तो पुलिस का फेल्योर है। इस तरह की दहशत बनाकर कैसे अच्छी सरकार और अच्छा प्रशासन चल सकता है। पुलिस को सजग होना चाहिए। बीजेपी के एजेंडे पर काम करना बंद करना चाहिए।

रिश्वत की रकम दराज में रखते ही लोकायुक्त ने पकड़ा

बीडीए के बाबू की करोड़ों की प्रॉपर्टी, होटल-बॉयज हॉस्टल और मकान में 30 किराएदार

भोपाल (नप्र)। लोकायुक्त पुलिस ने शुक्रवार को भोपाल डेवलपमेंट अथॉरिटी (बीडीए) के बाबू को 40 हजार रुपए की रिश्वत लेते ट्रैप कर लिया। आरोपी सहायक ग्रेड-1 तारकचंद दास ने यह रकम रत्नागिरी प्रोजेक्ट में रहने वाले एक व्यक्ति से लीज रिन्यू करने के नाम पर मांगी थी। वह 3 लाख 35 हजार रुपए मांग रहा था। काफी मनाने के बाद पहली किस्त के 40 हजार रुपए उसने शुक्रवार को लिए।

घूस की रकम तारकचंद ने स्टाफ के सामने ही अपनी टेबल की दराज में रखवा दी। इसी दौरान लोकायुक्त पुलिस की टीम ने उसे गिरफ्तार कर लिया। तारकचंद ने दफ्तर के सामने ही पत्नी मंदिरा दास के नाम से दुकान ले रखी है। रजिस्ट्री के सर्विस प्रोवाइडर का लाइसेंस भी है। बीडीए से प्रॉपर्टी खरीदने वालों पर दास का दबाव रहता है कि रजिस्ट्री यहीं से कराएं।

फरियादी ने एसपी लोकायुक्त मनु व्यास के कार्यालय में शिकायत की थी। इस पर कार्रवाई करते हुए निरीक्षक नीलम पटवा की अगुवाई में टीम ने शुक्रवार को बीडीए के बाबू तारकचंद दास (58) को 40 हजार रुपए की रिश्वत लेते रंगे हाथों पकड़ा। तारकचंद पंचशील नगर में मकान नंबर 10 में रहता है।बाबू तारकचंद मकान की लीज रिन्यू करने के लिए रिश्वत की पहली किस्त ले रहा था।

6 महीने से परेशान कर रहा था बाबू

शिकायतकर्ता अपने मकान के लीज नवीनीकरण के लिए पिछले 6 महीने से तारकचंद दास के चक्कर काट-काटकर परेशान था। आरोपी बिना रिश्वत लिए काम करने को राजी नहीं था। इससे तंग आकर उसने रिश्वत की रकम तय की और लोकायुक्त में शिकायत कर दी।

- **अवैध रजिस्ट्री के मामले की भी होगी जांच-** होशंगाबाद रोड स्थित विद्या नगर में अनिल साखी के प्लॉट की रजिस्ट्री किसी अन्य व्यक्ति के करा लेने के मामले में 19 जून को क्राइम ब्रांच ने एफआईआर दर्ज की है।

इस मामले में बीडीए के सीनियर अफसरों की भूमिका भी संदिग्ध बताई जाती है। फिलहाल कलेक्टोरेट में इसकी जांच चल रही है। लोकायुक्त पुलिस इस रजिस्ट्री में तारकचंद दास की भूमिका की भी जांच करेगी।

भोपाल में युवक के सुसाइड के बाद रहवासी बोले

बंदूक की नोक पर हमारे घर तोड़े गए

नया आशियाना भी तोड़ने की धमकी देते थे निगम अधिकारी

भोपाल (नप्र)। नगर निगम और प्रशासन ने पुलिस की मौजूदगी में सात महीने पहले भदभदा बस्ती के रहवासियों के साथ ज्यादती की। बीस मकानों को तोड़ना था, मनमर्जी से अधिक मकानों को तोड़ दिया गया। विरोध करने पर टीआई शाहपुरा ने कनपटी पर बंदूक रख दी। 50-60 पुलिसवालों ने घरकर मुझे एक स्थान पर बैठाए रखा। सात महीने पहले भदभदा में हुई इस कार्रवाई में शादाब खान (24) का भी मकान तोड़ा गया था।

उसे टीटी नगर इलाके में टीन शेड के मकान में शिफ्ट किया। यहां जैसे-तैसे शादाब बूढ़ी मां-पिता के साथ रह रहा था। किराए का ऑटो चलाकर अपने परिवार को पाल रहा था। नगर निगम के एक अधिकारी बीते तीन महीने से लगातार टीन शेड वाले मकान को खाली करने का दबाव बना रहे थे। बात नहीं मानने पर दोबारा पुलिस की मदद से मकान को तोड़ने की धमकी दे रहे थे।

आए दिन की धमकियों से शादाब डिप्रेशन में आ चुका था। इसी के चलते उसने सुसाइड कर लिया। यह आरोप शादाब के परिचित और भदभदा बस्ती में रहने वाले गुफरान अली के हैं। उन्होंने शादाब की मौत के लिए नगर निगम के अधिकारी को दोषी बताया है।

टीआई मनोज पटवा के मुताबिक शादाब खान (24) पुत्र अरमान खान निवासी कस्तूरबा स्कूल सामने टीन शेड ऑटो चलाता था। गुरुवार की शाम को उसने घर में फांसी लगाकर खुदकुशी कर ली थी। सुसाइड नोट नहीं मिलने से खुदकुशी के कारणों का खुलासा नहीं हो सका है। परिजनों के आरोपों की जांच की जा रही है।

क्या है मामला

भोपाल की भदभदा बस्ती से टीटी नगर में शिफ्ट किए गए एक युवक ने गुरुवार रात फांसी लगा ली थी। परिजन और रहवासियों का आरोप है कि निगम और जिला प्रशासन के अफसर शेड तोड़ने की धमकी दे रहे थे। इसलिए युवक ने फांसी लगा ली। इधर, शुक्रवार को परिजनों ने भदभदा बस्ती के बाहर शव रखकर प्रदर्शन किया था। पुलिस की समझाइश के बाद प्रदर्शन समाप्त किया गया। गुरुवार रात घटना के बाद पूर्व मंत्री पीसी शर्मा, निगम में नेता प्रतिपक्ष शबिस्ता जकी समेत कई कांग्रेस मौके पर पहुंचे। रहवासियों ने बताया कि भदभदा बस्ती तोड़ने के बाद कुछ लोगों को टीटी नगर में शेड बनाकर दिए थे। इन्हें भी तोड़ने की निगम और प्रशासन के अफसर धमकी दे रहे थे। इससे चालक शादाब टेंशन में रहता था। गुरुवार देर शाम शादाब ने अपने ही घर में फांसी लगा ली।

भोपाल में घर में घुसा नकाबपोश बदमाश, बाइक चुराई

भोपाल (नप्र)। शाहजहांनाबाद इलाके में स्थित रोज ब्यूटी पार्लर के संचालिका के घर से नकाबपोश बदमाश ने उनकी बाइक को चोरी कर लिया। आरोपी ने वारदात के पहले आधे घंटे तक रेकी की थी। पूरी वारदात घर में लगे सीसीटीवी कैमरे में कैद हुई है।

फरियादी ने इस मामले की शिकायत थाने में की है। आवेदन रिसीव कर पुलिस ने जांच शुरू कर दी है।

भोपाल में भाई के दोस्त ने छात्रा से की ज्यादती

• धमकी देकर एक साल तक संबंध बनाता रहा आरोपी

भोपाल (नप्र)। भोपाल के निशातपुरा इलाके में मौसेरे भाई का दोस्त एक छात्रा के साथ करीब एक साल से ज्यादती कर रहा था। आरोपी भाई को जान से मारने की धमकी देकर उसके साथ शोषण करता रहा। पुलिस ने इस मामले में आरोपी युवक के खिलाफ केस दर्ज कर उसकी तलाश शुरू कर दी है।

आरोपी के संभावित ठिकानों पर दबिश दी जा रही है। पुलिस के मुताबिक 23 साल की युवती एक कॉलोनी में रहती है। वह प्राइवेट कॉलेज से बीकॉम की पढ़ाई कर रही है। आरोपी युवक अंकित दांगी उसके गांव का रहने वाला है और मौसेरे भाई का दोस्त है। इस कारण दोनों का घर पर आना-जाना था। दोनों एक-दूसरे से फोन पर बातचीत करते थे।

यह बात जब छात्रा के पिता को पता चली तो आरोपी युवक के घर गए। पूरी बात उनके परिजनों को बता दी। इसके बाद बातचीत बंद हो गई।

बाद में दोनों फिर बात करने लगे। 21 अगस्त 2023 को आरोपी युवक पीड़ित के घर पहुंचा और हंगामा करने लगा। जबरदस्ती घर में घुसकर उसके साथ दुष्कर्म किया। उसके बाद से वह लगातार पीड़ित का शोषण कर रहा था। उसकी करतूतों से परेशान होकर पीड़िता ने थाने में शिकायत कर दी। अब पुलिस आरोपी युवक की तलाश कर रही है। पुलिस का कहना है कि जल्द ही आरोपी को गिरफ्तार कर लिया जाएगा।

नाबालिग को छेड़ा और पीटा

इधर, अरेरा हिल्स पुलिस ने बताया कि भीम नगर में रहने वाली 16 साल की छात्रा है। शुक्रवार रात वह घर के बाहर खड़ी थी, तभी दीपक गिरी नाम का युवक आया और उसके साथ छेड़छाड़ करने लगा। जब लड़की ने विरोध किया, तो आरोपी ने उसके साथ मारपीट कर दी। इसके बाद पीड़ित ने परिजन के साथ थाने पहुंचकर मामला दर्ज कराया। पुलिस ने भी आरोपी को गिरफ्तार कर लिया है।

दिग्विजय बोले-झारखंड में भाजपाइयों के घर तोड़ेंगे क्या?

रांची एसएसपी का वीडियो पोस्ट किया, प्रियंका ने लिखा-यह बर्बरता; शिवराज बोले-सोरेन ने जुल्म ढाया

भोपाल (नप्र)। एमपी के छतरपुर में थाने पर पथराव के आरोपी की कोठी तोड़ने के बाद मामले ने सियासी तूल पकड़ लिया है। झारखंड के रांची में प्रदर्शन के दौरान भाजपा कार्यकर्ताओं ने भी पुलिस पर पत्थर फेंके। इसे लेकर पूर्व सीएम और राज्यसभा सांसद दिग्विजय सिंह ने अपने एक्स हैंडल पर रांची के एसएसपी चंदन सिन्हा का वीडियो शेयर किया है।

वीडियो में रांची के एसएसपी कहते दिख रहे हैं, 'भाजपा कार्यकर्ताओं ने पुलिस पर पत्थरबाजी की है। आप एक तरफ भारत माता की जय बोल रहे हैं। दूसरी तरफ भारत माता के जवानों को पत्थर मार रहे हैं, जिससे उनकी जान जा सकती है।'

दिग्विजय ने भाजपा से पूछा कि छतरपुर की तरह यहां भी भाजपाइयों के घर पर बुलडोजर चलवाएंगे? इस पर केंद्रीय मंत्री शिवराज सिंह चौहान ने कहा कि, हेमंत सोरेन सरकार जुल्म ढा रही है। कांग्रेस महासचिव प्रियंका गांधी ने कहा- यह बर्बरता और अन्याय की पराकाष्ठा है। पूर्व सीएम के सवालों के जवाब में एमपी प्रदेश भाजपा अध्यक्ष वीडी शर्मा ने कहा है कि दिग्विजय सिंह को झूठ परोसने का टेंडर मिला है। रांची में शुक्रवार को प्रदर्शन कर रहे भाजपा कार्यकर्ताओं पर पुलिस ने वाटर कैनन और टियर गैस छोड़ी थी। भाजपा नेताओं ने आरोप लगाया है कि पुलिस ने रबर के बैलेट दागे थे।

आरोपी का घर ढहा देना न्याय नहीं: प्रियंका गांधी ने भी एक्स पर लिखा- अगर कोई किसी अपराध का आरोपी है तो उसका अपराध और उसकी सजा सिर्फ अदालत तय कर सकती है, लेकिन आरोप लगते ही उसके परिवार को सजा देना, उनके सिर से छत छीन लेना, आरोपी का घर ढहा देना न्याय नहीं है। यह बर्बरता और अन्याय की पराकाष्ठा है।

शिवराज बोले- सोरेन सरकार ने बर्बरता की

झारखंड भाजपा के प्रभारी और केन्द्रीय कृषि मंत्री शिवराज सिंह चौहान ने कहा- झारखंड में अन्याय की अति और जुल्म की पराकाष्ठा हुई है। अराजक सरकार नौजवानों के आक्रोश का मुकाबला नहीं कर पा रही। जो वादे किए थे, 5 लाख नौकरी के, बेरोजगारी भत्ते के, उनमें से एक भी पूरा नहीं हुआ। जब आक्रोश जताने बीजेपी युवा मोर्चा के कार्यकर्ता आ रहे थे, तो बर्बरता शुरू हो गई। जगह-जगह कार्यकर्ता पकड़े गए। बसें रोकी गईं। बस मालिकों को डराया गया। ऐसा अन्याय लोकतंत्र में कहीं नहीं देखा। कंटीले और नुकीले तारों की बाड़ें लगा दीं। हम भी चार बार मुख्यमंत्री रहे। क्या लोकतांत्रिक आंदोलन को ऐसे कुचला जाता है। डरे हुए हेमंत सोरेन, किसी भी कीमत पर भाजपा के कार्यकर्ता पहुंच ना पाएं, इसलिए ऐसी बर्बरता की, वो अकल्पनीय है। कार्यकर्ताओं पर लाठियां बरसाई गईं। ये जो हेमंत सोरेन ने जुल्म ढाया है, ये जो अहंकार आया है, वो रावण का नहीं रहा, तो तुम्हारा कहां रहेगा।

दिग्विजय ने पूछा-

इन भाजपाइयों को नेस्तनाबूद करेंगे ?

दिग्विजय सिंह ने रांची एसएसपी का वीडियो पोस्ट करते हुए लिखा- 'वीडी शर्मा अब इन भाजपा कार्यकर्ताओं को भी नेस्तनाबूद कर उनके घर पर जेसीबी चलवाएंगे? एक अन्य पोस्ट में उन्होंने छतरपुर में हुई कार्रवाई को लेकर एक्स पर लिखा- छतरपुर में थाने पर पथराव का मैं समर्थन नहीं करता, लेकिन इसके आरोप में हाजी शहजाद अली का मकान जमींदोज करना, उनकी गाड़ियों पर बुलडोजर चलाना और उसे गुनाहों का मुखिया घोषित करना भी संदेह पैदा करता है। दिग्विजय ने आगे लिखा- संदेह यह भी है कि मप्र में भाजपा नेता जिस घटना को पत्थरबाजी से जोड़ रहे हैं। स्थानीय कलेक्टर उसे अवैध निर्माण का मामला बता रहे हैं। दिग्विजय ने कहा- सबसे बड़े कोतवाल सांसद जी बनकर उभरे और तुरंत बयान दे दिया कि पत्थर फेंकने वालों के साथ यही सलूक किया जाएगा और उन्हें नेस्तनाबूद कर देंगे। क्या देश में न्यायालय की भूमिका खत्म हो गई है? क्या स्थानीय पुलिस और सांसद ही कानूनी फैसले लेने के लिए नियुक्त कर दिए गए हैं?

मसूद ने पूछा- क्या छतरपुर जैसा एक्शन रांची में होना चाहिए

भोपाल मध्य से कांग्रेस विधायक आरिफ मसूद ने कहा- मप्र के भाजपा नेता छतरपुर की घटना पर बड़ी-बड़ी बात कर रहे हैं, उनसे पूछना चाहता हूं कि अब इन पर क्या कार्रवाई होना चाहिए। इन्होंने भी पुलिस को मारा है। ये भी भारत के जवान हैं। अब इन पर पुलिस एफआईआर तो करेगी ही, लेकिन एफआईआर के साथ बाकी क्या कार्रवाई होना चाहिए? क्योंकि हम तो संविधान को मानने वाले हैं। अब हम इनसे (बीजेपी) पूछना चाहते हैं कि जो कार्रवाई छतरपुर में हुई है, वो रांची में होना चाहिए?

समीक्षा

सुरेश रायकवार
समीक्षक

कुछ चेहरे, कुछ यादें (रेखाचित्र)

आपको यदि किसी व्यक्ति का हुलिया बताया जाय तो आवश्यक नहीं कि आप उसे पहचान ही लें। किन्तु साहित्यिक गद्य लेखन में रेखाचित्र एक ऐसी विधा है जिसमें शब्दो के माध्यम से व्यक्ति का ऐसा चित्र उकेरा जाता है कि आपके दिमाग में संबन्धित पात्र की हूबहू छबि निर्माण हो जाती है। यद्यपि यह अधिक लोकप्रिय विधा नहीं बन सकी और वर्तमान में इसे लुप्तप्राय विधा ही कहा जा सकता है। किन्तु श्रीमति ज्योति जैन की सद्य प्रकाशित पुस्तक कुछ चेहरे, कुछ यादें (रेखाचित्र) ने इस विधा को पुनः जीवित कर दिया है।

मालवी की मिठास में डूबी एक हंसमुख, मृदुभाषी और मिलनसार शख्शियत एवं साहित्य की दुनिया में एक जाना-पहचाना नाम अर्थात श्रीमती ज्योति जैन। उनकी सफल साहित्यिक यात्रा का आंकलन यदि करना हो तो अब तक उनके दो कहानी संग्रह, दो कविता संग्रह,दो उपन्यास, एक निबंध संग्रह, एक यात्रा वृतांत और तीन लघुकथा संग्रह प्रकाशित हो चुके है। एक विशिष्ट बात और है कि उनके तीनों लघुकथा संग्रहों का अनुवाद बंगला, मराठी और अङ्ग्रेज़ी भाषा में हो चुका है। यही नहीं उनकी दो लघुकथाएं महाराष्ट्र शिक्षा बोर्ड की कक्षा नौवीं के पाठ्यक्रम में भी पढ़ाई जा रही है। श्रीमति ज्योति जैन साहित्य जगत के कई प्रतिष्ठित पुरुस्कारों से भी सम्मानित हो चुकी हैं।

श्रीमति ज्योति जैन ने अपने शब्दों की तूलिका और शब्द-रंगों से ऐसे रेखाचित्रों को उकेरा है जो हमसे बात करते है, हमे हँसाते हैं तो कुछ रुलाते भी है। इसीलिए प्रसिद्ध साहित्यकार श्री पंकज सुबीर जी ने पुस्तक की भूमिका में लिखा है ÷ज्योति जैन जी ने जहां भी व्यक्तियों पर काम किया है, वहाँ उनके काम की बारीकी और काम करने का सलीका देखने लायक है। जैसे कोई मूर्तिकार, छोटी छैनी और हथोड़ी लिए एकाग्रता के साथ मूर्ति को गढ़ता है, एक-एक रेशा उभारता है। ऐसे, कि मूर्ति प्राण-प्रतिष्ठा के पूर्व ही सजीव लगने लगती है। ज्योति जैन जी ने जैसे अपने शिल्प से इन पात्रों में प्राण-प्रतिष्ठा कर दी है।÷

ज्योति जी ने अपने आसपास, अपने साथ रहने वाले लोगों में से ही पात्र चुने है जैसे अपनी माँ, पति, मकान मालकिन, नौकर-नौकरानी, पड़ोसी, शिक्षक, सखी सहेली आदि। इसके अतिरिक्त अपने प्रकृति प्रेम के कारण उन्होने नदी, गिलहरी चिड़िया आदि को भी इस रेखाचित्र में स्थान दिया है।

हर पात्र के हुलिये का वर्णन ऐसा किया है कि कोई भी चित्रकार आसानी से उसका हूबहू रेखाचित्र का निर्माण कर सकता है। जैसे भेरुदादा के लिए वे लिखती हैं धूसर रंगों की हाफ स्लीव शर्ट, गहरे रंगों की पेंट, वो भी पांयचे मुड़े हुए। थोड़े से लंबे..., बिना मांग के.. तेल डले भूरे बाल। लंबा चेहरा, बालों के ही समान भूरापन लिए हल्की भूरी आँखें, नुकीली भूरी मुंछें, दंत-पंक्ति कतार में लेकिन तंबाकू के सेवन से पीली। आपको पढ़कर लगेगा कि भेरुदादा हमारे सामने ही खड़े है।

'काल करे सो आज कर' के उपाध्याय जी का हुलिया बतलाते हुए उन्होने लिखा है- उपाध्याय अंकल यानि...एक हेंडसम बूढ़े। वे बहुत अच्छे दिखते थे। फर्स्ट क्लास ऑफिसर के पद से सेवानिवृत। टिप-टॉप रहने की आदत उनकी अभी भी बरकरार थी। अंकल एकदम गोरे चिट्टे थे। उनकी त्वचा का कलर, विशेषकर चेहरे का ऐसा था जैसे दूध के अंदर एक चुटकी भर सिंदूर मिला दिया हो वैसा गुलाबी रंगत लिए उनका चेहरा था। उनके बाल बीच में से उड़े हुए थे, उनकी टकली नजर आती थी। लेकिन आजू-बाजू के सफ़ेद बाल थोड़े-थोड़े थे और भवें भी हल्की सी सफ़ेद। और आँखें कुछ बिल्लौरी। और हाँ...! क्लीन शेव रहते थे। मुझे लगता है वो नियम से शेव करते थे। सामान्यतौर पर वो आधी बांह का ऐसे कुर्ता-सा पहने रहते थे और नीचे पायजामा। पैरों में हमेशा वो कपड़े के जूते पहनते थे।÷ पूरा व्यक्तित्व ही आँखों के सामने सजीव हो उठा।

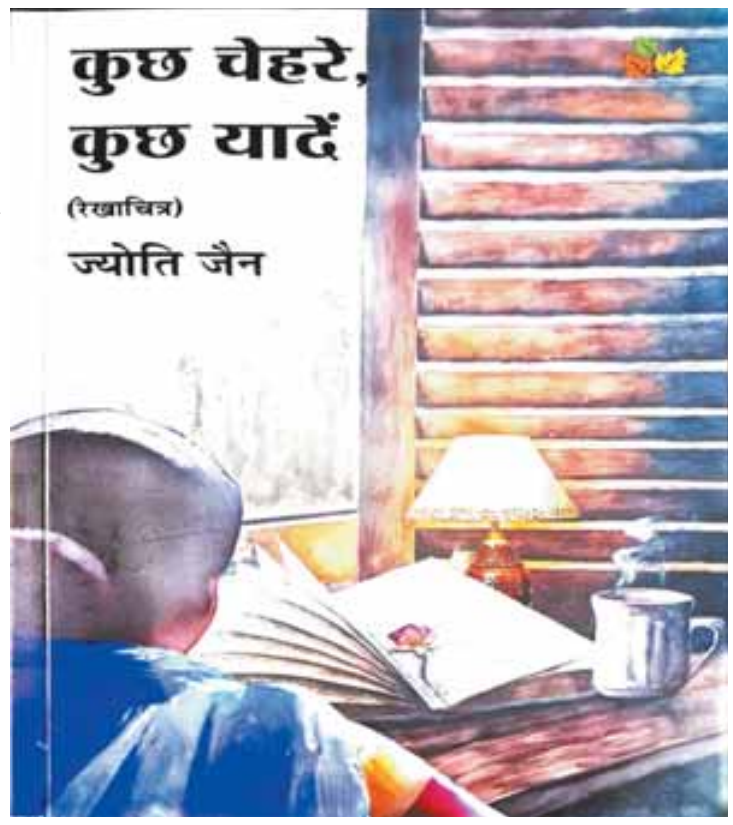

लघुकथा के सशक्त हस्ताक्षर श्री सतीश दुबे का बारीक मुआयना करते हुए वे लिखती है ङ्क व्हील चेयर पर बैठी वो बिल्कुल दुबली-पतली काया। उनके हाथ भी अजीब तरीके से मुड़े हुए थे, अंगुलियाँ भी....। पूरी आस्तीन का कुर्तानुमा शर्ट पहना था और पायजामा। पैर व्हील चेयर के पायदान पर थे और घुटनो पर उनके हाथ टिके हुए थे। मोटी काली फ्रेम का चश्मा, बिल्कुल पिचके हुए गाल, खिचड़ी बाल.... लेकिन आत्मविश्वास से भरपूर व्यक्तित्व मेरे सामने शारीरिक अक्षमताओं को अँगूठा दिखा रहा था।

श्रीमति ज्योति जी जैन के रेखाचित्र यह भी बतलाते हैं की ज्योति जी अपने सम्बन्धों, अपने रिश्तों को कितनी संजीदगी, शिद्धत और ईमानदारी से निभाती है। इसीलिए 'किसी राजबाड़े से कम नहीं था वह बाड़ा'में वे कहती है - वो मेरी रक्त संबंधी नहीं थी। लेकिन हम उन्हे गीता भाभी कहते थे। आगे बढ़ी तो बाबू की बाई ने पूछा- क्यों गुड्डी आ गई स्कूल से? जब उनके पैर मे कुछ चुभा तो बाड़े के घरों से गीता भाभी, हीरालाल डोडियाजी, सुनील के पापा सोहनलाल टेलर, शशि की मम्मी राधा भाभी आदि बाड़े के सभी लोग बाहर निकल आए। बाद में मकान मालकिन काकी साब, सजन बाई, मदन की बाई आदि भी पता चलने पर हाल पूछने घर आए।

'काश...मैंने फोन रिसीव कर लिया होता' में एनसीसी ग्रुप के मित्र दुष्यंत या फिर 'सराफे से सराफे तक सोने से सोने तक की यात्रा' में उनकी अंतरंग सहेली विजू (विजिया) के रेखा चित्र लेख पढ़कर आप समझ सकेंगे कि एक मित्र को खोने का दर्द कैसा होता है।

ज्योति जी जैन ने पुस्तक में दो मूर्धन्य साहित्यकारों श्री सतीश दुबे एवं दादा नरहरी पटेल के जीवन को भी उकेरा है जो उनके साहित्यिक परिचय से भिन्न एक अलग ही व्यक्तिव की पहचान करवाता है।

÷मौसम की तरह रंग बदलती शिवना नदी÷ में शिवना का बहुत ही जीवंत चित्रण किया गया। पढ़ते-पढ़ते आपको लगेगा की कोई पवित्र नदी आपकी आँखों के सामने ही बह रही है। तो वहीं 'रामजी के आशीर्वाद वाली 'तालुडी'' में एक गिलहरी का मार्मिक और भावुक कर देने वाला रेखाचित्र लेख है।

पारंपरिक लोक त्योहार संजा का वर्णन भी ऐसा किया गया है कि जो लोग यह त्योहार नहीं भी मनाते है वे पढ़कर यह त्योहार मना लें। संजा के लिए गाये जाने वाले गीत और बच्चों के उत्साह का ऐसा प्रस्तुतीकरण जो इस त्योहार के पूरे वातावरण की तस्वीर खींच देता है।

ज्योति जी कितनी संवेदनशील और दयावान है यह उनके रेखाचित्र लेख ' रेखाओं से भरा चित्र - वह बूढ़ा मॉडल', 'मरद है तो पीटेगा तो सही' एवं 'समझदारों की दुनिया में वह पगल जीनेश्वर....' में उभर के सामने आता है। जहां विश्वास है वहाँ विश्वासघात भी... में एक गाइड 'कादो' के माध्यम से पूरे भूटान के प्राकृतिक सौंदर्य की यात्रा तो कारवाई ही, साथ ही विदेश में अंजान गाइड पर विश्वास के साथ जो विश्वासघात मिला उसे भी लेखिका ने सकारात्मकता से स्वीकार किया और अपने उदार भाव का त्याग फिर भी नहीं किया।

जीवन के सम्मानित रिश्तों माँ, सासू माँ और पति के साथ रिश्तों के लिए लिखे उनके शब्द आपको भाव विव्हल कर देंगे और कहीं-कहीं अति भावुक भी। मुझे लगा कि ये लेख उन्होने पूर्ण साक्षी भाव से लिखे है।

साहित्य में रेखाचित्र विधा को परिभाषित करती इस पुस्तक में आलोचना के लिए कुछ नहीं है। पुस्तक में ज्योति जी का शब्द प्रवाह पाठक को बांधे रखने में सक्षम है साथ ही जहां जहां भी उन्होने स्थानीय भाषा 'मालवी' का प्रयोग किया है वह लेख को रोचकता ही प्रदान करता है। यह पुस्तक साहित्य की एक लुप्त विधा 'रेखाचित्र' में लिखी गई है अतः ना केवल विधा को समझने के लिए बल्कि पुस्तक मे शामिल सभी पठनीय लेखों के लिए अवश्य पढ़ी जाना चाहिए।आशा है यह पुस्तक पाठकों को पसंद आएगी।

पुस्तक - कुछ चेहरे, कुछ यादें (रेखाचित्र)÷
लेखक- श्रीमति ज्योति जैन
प्रकाशक- शिवना प्रकाशन, पी सी लैब, सम्राट कॉम्प्लेक्स बेसमेंट,
बस स्टैंड, सीहोर-466001 (म प्र)
आईएसबीएन नंबर- 978-81-19018-74-1
मूल्य- रु175/-

कविता

बांग्लादेश में नरसंहार

महेश श्रीवास्तव

वहां छा गया है
कट्टर धर्मांधता का क्रूर अंधकार
मांद से निकल आए हैं हिंसक जानवर
करने अहिंसक जीवों का निर्मम शिकार
खुल गए हैं भेड़ियों के जबड़े
गिद्धों चमगादड़ों के चोंच और पंजे
चिथड़े चिथड़े कर दी गई है मासूम चिड़ियायें
नोच कर खाने लगे हैं जंगली कुत्ते
अपना जीवित शिकार।

प्रार्थना का सर तन से जुदा कर
घोंप दी गई भरोसे के सीने में तलवार
संबंधों की चिता बनाकर लगा दी गई आग।
झूम रहे हैं रक्त पिपासु
सुनकर गर्भिणी की करुण चीत्कार
नन्हे शिशुओं का आर्तनाद
निरीहों का हाहाकार
लगते थे जो अपने
बन गए दैत्य और पिशाच।

वैसे
शाकाहारी भी होते बलवान
पर बने रहते दयावान
फेरते रहते विश्व बंधुत्व की माला
बांटते रहते करुणा, प्रेम, क्षमा का ज्ञान
सीखे नहीं इतिहास से
न बिना शस्त्र बचते हैं शास्त्र
न बिना पुरुषार्थ बचते हैं धन, धर्म, प्राण
जो लड़ते नहीं भागते
बचाने नहीं आता उन्हें भगवान।
समय की सुनो
जागो, उठो, एक हो जाओ
दैत्यों को दिव्यता दिखाओ
पशुओं पर पाशुपत चलाओ।
साहस दिखाओ
जीतने के लिए ही नहीं
जीवित रहने के लिए भी
या लड़ते हुए
वीरगति पा सकने के लिए भी।

(लघुकथा)

प्रभुनाथ शुक्ल

मजबूरी

मैं कपड़ा खरीदने के लिए उस दुकान में पहुँचा था। दुकान के मालिक मेरे परिचित थे लिहाजा मैं कपड़े वहीं खरीदता हूँ। दुकान पर एक गेहूँएं रंग की शालिन लड़की मुस्कुराते हुए मेरा स्वागत किया।

'आइए चाचा जी, आइए। क्या लेंगे'

तुम्हारे पापा नहीं हैं क्या बिटिया मैंने उस लड़की से सवाल किया था।

चाचा जी ! अंकल दूसरी दुकान पर अभी-अभी गए हैं।

दरअसल यह मेरी दुकान नहीं है। मैं यहाँ नौकरी करती हूँ।

उसके प्रतिउत्तर से मैं चौंक गया था। क्या नाम है तुम्हारा

जी, अनीता

कितना पढ़ी हो

कहाँ पढ़ पाई अंकल, सिर्फ बारहवीं किसी तरह कर पाई

क्यों पापा क्या करते हैं।

पापा मुंबई में ऑटो चलाते हैं। हम छह बहने हैं। सबसे छोटा भाई है। भाई के इंतजार में हम छह बहने आ गईं। अब पापा के पास इतनी आमदनी नहीं है कि हमरा परिवार चल पाए। बड़ी बहन की शादी करनी है। वह भी पढ़ाई छोड़कर सिलाई करती है। छोटी बहनें पढ़ना

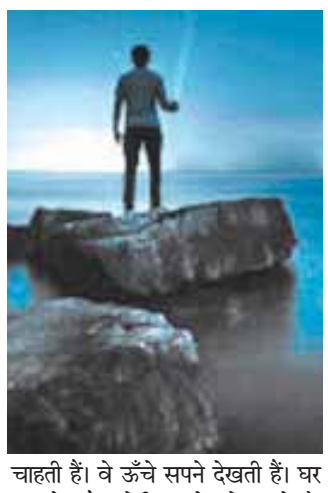

चाहती हैं। वे ऊँचे सपने देखती हैं। घर चलाने और छोटी बहनों को पढ़ाने के लिए चाह कर भी बड़ी बहन और मुझे पढ़ाई छोड़नी पड़ी। हम लोग अब समझदार हो गए थे फिर पापा पर और कितना बोझ डालते। इसलिए पढ़ाई छोड़नी पड़ी और मज़बूरी में यहाँ नौकरी करते हैं।

मैं बस, उसके चेहरे को देखता रह गया। जिंदगी की सबकी अपनी-अपनी समस्याएं हैं। उसकी समस्या के लिए मेरे पास कोई समाधान नहीं था।

नहीं चाहिए था उजाला

सुधीर कुमार सोनी

हमें नहीं चाहिए था उजाला
जो अपने को सूरज के समकक्ष समझे
हम अपनी ढिबरी और लालटेन के उजाले में
दिन बीता रहे थे, प्रसन्न थे
हमारे मिट्टी के घर के साथ ढिबरी और लालटेन
घुल-मिल गये थे ।
हमें आँखे को चमका दे ,ऐसा उजाला नहीं
चाहिए था
हमें आधी रात जगने को मजबूर कर दे
ऐसा उजाला भी नहीं चाहिए था।
सारी रात व्यक्ति अपनी नौकरी बजाए
ऐसा उजाला नहीं चाहिए था।
उजाला चाहिए था, रास्ते दिखे राहगीर को
कोई लूट न ले किसी नागरिक को अँधेरे में
कोई जबरिया किसी घर में अँधेरे में न घुस जाए ।
यह क्या बात हुई कि हमने अपने और समाज के
व्यक्तियों की सुरक्षा के लिए उजाला किया रात में
और सारे संगीन अपराध दिन के उजाले में होने लगे
सूरज की उपस्थिति में।

जन्माष्टमी पर विशेष

रूठी हुई दुनिया है ये

कमलेश कुमार दीवान

कृष्ण अब आ जाओ भी रूठी हुई दुनिया है ये
बांसुरी से धुन बजाओ, रूठी हुई दुनिया है ये
एक तिलस्मी जाल है चारों तरफ जो हमें घेरे हुए है
आश यह एक तेरा सहारा,टूटी हुई दुनिया है ये
खुश नहीं हैं गाय माता दुःख में बहुत है हर सखी

कहां हो सबके कन्हैया,छूटी हुई दुनिया है ये
लुट रही हैं अस्मिताएं सड़क घर द्वारो में भी
सच हिराए सरग से भी,झूठी हुई दुनिया है ये
दहशतो की सहर दुपहर, तो शाम में खबरें बुरी
पीढ़ियां नई कोपल बचाओ, ठूंठी हुई दुनिया है ये
हवाएं हैं न मौसम सहज न ही सुरक्षित है 'दीवान '
मधुर स्वर,छेड़ो पुरानी तान अनूठी हुई दुनिया है ये।

कहानी

दीपक मालवीय गागोरनी
कहानीकार

सुबह के आठ बज रहे थे। दरवाजा खटखटाने की आवाज सुनकर शीला ने खीझते हुए पूछा... अरे कौन है?.. आंटी मैं हुं छोटू... शीला ने कहा - आ रही हूं! ... शीला ने दरवाजा खोला । छोटू चिंतित लग रहा था और रोज की तरह आज भी उसके पैरो में चप्पल नहीं थी। टी शर्ट भी कुछ जगह से फट रही है। वो आज अखबार नहीं लाया है, क्योंकि आज अखबार का प्रकाशन नही हुआ है।

उसने कहा आंटी मैं आपके घर की सफाई कर दूं??

नहीं ,मैं खुद कर लूंगी ! (ऐसा कहकर शीला दरवाजा बन्द करने लगीं)... उसने शीला से अनुरोध करते हुए कहा ÷आंटी कर लेने दीजिए, मैं बहुत अच्छे से सफाई करूंगा।÷

शीला ने पुछ लिया - अच्छा बता कितने रुपए लेगा?

आंटी बस खाना खिला देना। शीला ने सोचा ये भूखा होगा उसने कहा , तू पहले खाना खा लें सफाई बाद में कर देना ।

नही आंटी .. मैं पहले सफाई कर दूं। शीला ने कहा % ठीक है तो। शीला ने उसे झाड़ू और पोछा दे दिया और कहा ये आंगन की और पीछे वाले हॉल की सफाई करनी हैं।

ऐसा कहकर शीला किचन की ओर चली जाती है.....

छोटू सफाई करने लग जाता है.... गमलों को भी साफ करके अच्छे से जमा देता है। काम करके छोटू थक जाता है, और थके भी क्यों न , नन्ही सी जान तो है ही। छोटू अभी मात्र ग्यारह बरस का ही तो है। उसका वास्तविक नाम छोटू नहीं राजकुमार था, जो कि उसके पापा ने रखा था। वो उसे बेटा कहते थे....। वो कहते थे, मेरा बेटा बहुत बड़ा आदमी बनेगा, राजा की तरह। पापा की तो आज से 7 साल पहले सड़क दुर्घटना में मौत हो गई है। अब मां है जो उसका पालन पोषण करती है लेकिन कुछ दिनो से वो भी बीमार है ।

छोटू वही आँगन में बैठ गया। टी शर्ट के कंधे से पसीना पूछ रहा था इतने में शीला भी अपना काम निपटा कर आ गई। अरे वाह! क्या बात है छोटू, तूने तो बड़ी सुंदरता से सफाई की है। गमले भी कितने अच्छे से जमाए है(तारीफ करते हुए शीला)। कहां से सीखा ये? .. ये सुनकर छोटू की जैसे कुछ थकान खत्म हुई हो, वह मुस्कराया बोला आंटी मां से सीखा है। अच्छा..... अब तू हाथ धो ले, मैं तेरे लिए खाना लगा देती हूं। नही आंटी, आप इस पॉलिथिन में रख दीजिए।

क्यों? यहीं खा ले न । नही आंटी मैं घर ले जाऊंगा।

शीला ने कहा घर पे क्यों? यहीं खा ले । उसने उदास होकर कहा- आंटी जी मेरी मॉ के लिए ले जा रहा हूं। उनकी तबियत खराब है, उन्हें टाइफाइड है। डॉक्टर ने बोला है खाना खिलाने के बाद दवाई देनी है।

ड्राइवर- मालकिन आ गया इसका घर। शीला ने गाड़ी से उतर कर देखा। एक छोटा सा कमरा जो मिट्टी का बना है और छत कवेलू की। मगर अन्दर सफाई अच्छी कर रखी है। शायद छोटू ने ही की होगी। शीला अंदर चली जाती है , देखती है एक खटिया है जिस पर छोटू की मां सोई हुई है। जो अभी 32 वर्ष की है। मगर बीमार हालत में 60 बरस की लग रही है। शीला उनके पास खटिया पर बैठ गई। आहट पाकर छोटू की मां जाग जाती है । जी आप कौन?

ये सुनकर शीला स्तब्ध रह जाती है उसकी आंखे भर चुकी थीं। उसको पश्चयाताप हो रहा था । वो खुद को कोस रही थीं, मैं कैसी औरत हुं? कैसी मां हूं ? एक बच्चे की परेशानी नहीं समझ पाई। छोटे से बच्चे से सफाई करवा ली, वो भी एक वक्त के भोजन के बदले। बड़ी स्वार्थी हूं मैं!!.....

इससे पहले वो ज्यादा दुखी हो उसने छोटू और उसकी मां के लिए खाना पैक किया, तुरंत ड्राइवर को बुलाया और कहा कि हमें अख़बार वाले छोटू के घर चलना है। शीला छोटू को लेकर गाड़ी में बैठ गई। चूंकि ड्राइवर ने छोटू का घर देख रखा था इसलिए वह उसके घर ले गया। लगभग पंद्रह - बीस मिनट के रास्ते में शीला का दिमाग जानें क्या-क्या सोच रहा था और खुद को दोषी महसूस कर रही थी।

मैने पहचाना नहीं.. छोटू बोल पड़ता हैं - मां ये शीला आंटी है , मुझसे रोज अख़बार खरीदती है। आज हमारे लिए अपने घर से खाना लाई है...(छोटू प्रसन्न होकर)।

शीला ने बड़े प्यार से छोटू की मां को खाना खिलाया और फिर दवाई खिलाई। छोटू को भी खाना खिलाया। शीला ने छोटू की मां से पूछा - बहन, क्या नाम है तुम्हारा?

इतने में छोटू बोल पड़ा 'रुक्मणि बाई'। शीला ने रूक्मणी से एक दो - घंटे तक बाते की.....।

छोटू और उसकी मॉ की आंखों में आंसु थे। पहली बार कोई व्यक्ति उनकी सहायता करने आया था।

यह अवसर पाकर शीला भगवान को धन्यवाद दे रही थी ।

शीला ने छोटू से पूछा तु पढाई करता है?

छोटू उत्साहित होकर - हां, मुझे अंग्रेजी भी पढ़ना आती है।

अच्छा....वो कार के पीछे अंग्रेजी में क्या लिखा है बता?(शीला मुस्कराते हुए)

आंटी वो प्रियांशी लिखा है। अरे वाह! तूझे तो सच में अंग्रेजी आती है। शीला ने कहा अब तू अखबार नहीं बांटेगा, बल्कि स्कूल में पढ़ने जायेगा। नही आंटी , मां की देखभाल कौन करेगा और खाने के लिए, मां की दवाई के लिए पैसा कहां से आयेगा।

शीला - तू उसकी चिंता कर, तू इतना बड़ा भी नहीं हुआ है । अब, तू और मां दोनो मेरे घर पर रहेंगे और मां की देखभाल भी मेरी जिम्मेदारी। रूक्मणी ने भी घर रहने के लिए मना कर दिया। नहीं बहन जी! आपने आज जो मदद की वही बहुत बड़ा एहसान है आपका। मैं कर लेती हुं काम मगर अभी तबीयत खराब हैं न, दो चार दिन में ठीक हो जाएगी। आप बिल्कुल चिंता मत कीजिए (रुक्मणि ने शीला को विश्वास दिलाते हुए कहा)।

शीला कहती है ठीक है बहन। मगर कभी खुद को अकेला महसूस मत करना। जब भी कुछ जरूरत लगे, कोई परेशानी हो तो अपनी इस छोटी बहन को बताना। ऐसा कहकर शीला अपने घर आ जाती है। छोटू और उसकी मां के लिए दोनो वक्त का भोजन शीला के घर से ही जाने लगा। समय- समय पर शीला भी मिलने चली जाती। एक दिन खबर मिलती है कि छोटू की मां का देहांत हो गया। शीला वहां पहुंचती है और अंतिम संस्कार करवाती है। वह छोटू को अपने साथ घर ले आती है। शहर के प्रसिद्ध स्कूल, जिसमे शीला की बेटी प्रियांशी पढ़ने जाती है उसी में छोटू का दाखिला कक्षा 5 वी मे करवा देती हैं। छोटू पढ़ने में तेज था। धीरे धीरे वो कक्षा में अव्वल आने लगा। फिर आगे की पढाई के लिए शीला ने उसे बाहर शहर में भेज दिया। छोटू शीला शीला को अब मां कहने लगा और प्रियांशी को दीदी।

साल बीतते गए..... फिर एक दिन;

छोटू , अब छोटू नही रहा बल्कि राजकुमार सर बन जाता है। असल मैं वो SDM बन जाता है....। यह खबर हवा की तरह सारे शहर, गांव, गली- मोहल्ले में फेल जाती है।... ख़बर सुनकर उसकी मां (शीला) की खुशी का ठिकाना नहीं रहता। वो जोर जोर से कहती है - मेरा छोटू सछरूबन गया, मेरा छोटू एसडीएम बन गया। रूक्मणी की तस्वीर के सामने जाकर करुण स्वर में रोती हुई कहती है बहन तूने सुना अपना छोटू एसडीएम बाबू बन गया है।

स्वामी, सुबह सवेरे मीडिया एल.एल.पी. के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक उमेश त्रिवेदी द्वारा श्री सिद्धीविनायक प्रिंटर्स, प्लॉट नं. 26-बी, देशबंधु परिसर, प्रेस कॉम्पलेक्स, जोन-1, एम.पी.नगर, भोपाल, म.प्र. से मुद्रित एवं डी-100/46, शिवाजी नगर भोपाल से प्रकाशित।

संपादक - उमेश त्रिवेदी

(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र भोपाल रहेगा)

RNI No. MPHIN/ 2003/ 10923,
Ph. No. 0755-2422692, 4059111
Email- subahsaverenews@gmail.com

'सुबह सवेरे' में प्रकाशित विचार लेखकों के निजी मत हैं। इनसे समाचार पत्र का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

कला शिक्षा और खुद के अभिव्यक्ति पर संवाद

कला

पंकज तिवारी

कला समीक्षक

बात जब-जब चलेगी, तेरी बात होगी।
बिना तेरे पूरी कहाँ कोई बात होगी।।

बात अभिव्यक्ति की हो और कला का जिक्र न हो संभव ही नहीं है? आज जबकि शिक्षा में बच्चों से उम्मीद की जाती है कि वो रटे-रटाए उत्तरों से बचते हुए खुद को अभिव्यक्त करें। अपने अनुभवों और शब्दों के माध्यम से उत्तर तक पहुँचे। इस हेतु कला बहुत ही उपयोगी साबित हो रही है। कला में बच्चों को पूरी आजादी होती है। बंधनों से परे कल्पनाओं में उड़ने की आजादी। एक ही विषय पर हर बच्चे अपनी अलग-अलग अभिव्यक्ति देते हैं और आश्चर्य कि किसी को भी झुठलाया नहीं जा सकता। बस हमें उनके कृतियों को उनके नजर से समझने का प्रयास करना होता है। बात कोविड के समय की है लोग घरों में कैद थे। डर सभी में व्याप्त था। कुछ समय बाद ऑनलाइन कक्षाएं शुरू हुईं। बच्चों को कला के माध्यम से डर से बाहर निकालने के प्रयास में मैंने वीडियो बना कर कक्षा के ग्रुप में शेयर करना शुरू किया। चित्र बनाने की विधियाँ एवं कला से संबंधित वीडियो का असर ये हुआ कि बच्चे सब कुछ भूलकर इसी में रमें रहने लगे। निरंतर रंगों एवं रेखाओं से खेलते हुए अपनी एक अलग दुनिया बनाने में सफल हुए। एक ऐसी दुनिया जहाँ कल्पना में निरंतर गोते लगाने की पूरी आजादी होती है जहाँ कोविड का असर भी उनके मानसिक स्थिति को डावाँडोल करने में बेअसर रहा। कुछ बच्चे अपने अभिभावकों को भी इधर मोड़ पाने में सफल हुए। वैसे भी जब हम किसी मानसिक परेशानियों से जूझ रहे होते हैं तो कला, संगीत, साहित्य ही हमें वहाँ से बाहर ला पाती है।

कुछ बच्चे तो आज भी बहुत अच्छा कर रहे हैं।

अपनी अभिव्यक्ति में समाज के समस्याओं, अच्छे-बुरे को बहुत ही अच्छे तरीके से संजो रहे हैं और अच्छी बात ये कि उस पर खुल कर चर्चा भी कर रहे हैं। वीडियो बनाते समय घर में मुझे मेरा बेटा रोज देखा करता था। वो उस समय पहली कक्षा में पढ़ता था। मेरे चित्रों के नकल करता रहता था। धीरे-धीरे अपनी अभिव्यक्ति खुद करने लगा। आड़ी-तिरछी किन्तु निडर स्ट्रोक युक्त रेखाएं, कुछ भी किसी भी परिवार के रंगों का निडरता से प्रयोग उसकी विशेषता बन गई। देखते ही देखते करीब दो सौ चित्रों का संग्रह हो गया उसके पास। कभी-कभी अचानक से किसी प्रतियोगिता में जाना होता है। बच्चों से उनके रुचि के अनुरूप पूछ लिया जाता है। कुछ बच्चे प्रतियोगिता में भाग लेने हेतु तुरंत तैयार हो जाते हैं। उन्हें अचानक से विषय बताया जाता है। वैसे भी कला के प्रतियोगिता में विषय स्पॉट पर ही दिया जाता है। आश्चर्य कि बच्चे, छोटे बच्चे कितनी गूढ़ रहस्यों से भरी कृतियों का निर्माण कर जाते हैं। जहाँ तक हम और आप या आम जनमानस आसानी से पहुँच भी नहीं सकता बच्चे अपने कृतियों के माध्यम से पहुँच जाते हैं। प्रतियोगिता में पुरस्कृत होना न होना अलग बात है पर उनकी अभिव्यक्ति क्षमता पर अध्ययन किया जाय तो हर बच्चे के कृति में उसकी अपनी एक दुनिया होगी जहाँ वो खुल कर रंगों से खेला है, बतियाने का प्रयास किया है एक-एक रेखाओं से। फिल्म 'तारे जमीं पर' इसका एक बहुत ही बढ़िया उदाहरण है। भारतीय कला में चित्रकार राजा रवि वर्मा के योगदान से शायद ही कोई अपरिचित हो। रवि वर्मा मात्र 14 वर्ष के थे जब उनके चाचा एक चित्र अधूरा छोड़ कर कहीं चले गए थे। आश्चर्य कि जब वो वापस आए उनका चित्र पूरा हो चुका था। बालक रवि वर्मा द्वारा बचा हुआ चित्र पूरा कर दिया गया था और कहीं से अप्रशिक्षित कलाकार द्वारा बनाया भी नहीं लग रहा था। उनके चाचा इतने प्रभावित हुए कि बालक रवि वर्मा के सुनहरे भविष्य हेतु पूरी तन्मयता के साथ जुट गए। 14-15 वर्ष की अवस्था में पिकासो के उम्दा चित्र देखकर और उन चित्रों से प्रभावित होकर उनके पिता जो खुद कला अध्यापक थे, को लगा कि इन कृतियों के आगे तो मेरी कृतियाँ कहीं भी नहीं ठहरती फलतः उन्होंने चित्र बनाना ही छोड़ दिया था। पेंटिंग संबंधित अपना सारा सामान उन्होंने पिकासो को दे दिया और कला के दुनिया में उड़ने हेतु आशीर्वाद भी। इस दुनिया में जितने भी लोग हैं किसी न किसी खूबियों से भरे हुए हैं। कोई न कोई विशेषता उनके पास है जो उन्हें औरों से अलग बनाती है। बच्चों के साथ भी यही बात सटीक बैठती है। बस आदरणीय अध्यापकों को उनके खूबियों को ढूंढ़ना है और उसी ओर बढ़ने के लिए प्रोत्साहित करना है। उन्हें शुरू से ही कुछ नया करने की आजादी देनी है। बच्चों के साथ जजमेंटल नहीं होना है। ऐसा करने पर निश्चित रूप से हम बच्चों से उम्मीद से ज्यादा प्राप्त कर पायेंगे। विषय कोई भी हो आजादी हर जगह चाहिए, खोज की गुंजाइश हर जगह है। हमें बच्चों को संवाद का पूरा मौका देना चाहिए। उनके बातों पर उनके साथ खुल कर विचार रखना चाहिए। छोटी-छोटी नाटिकाओं के माध्यम से गंभीर से गंभीर विषयों पर कार्यक्रम करवाने चाहिए। पर्यावरण, नशामुक्ति, संस्कृतियों का क्षरण, इलेक्ट्रॉनिक गैजेट्स के फायदे और नुकसान जैसे विषयों पर खुले मंच पर वाद-संवाद करवाना चाहिए। बच्चों को उन्हीं के द्वारा सही ग़लत के निर्णय तक पहुंचने हेतु स्वतंत्र छोड़ देना चाहिए। हमें उन गतिविधियों में बिल्कुल उदासीन बनकर रहना चाहिए। वहाँ श्रोता और वक्ता दोनों बस छात्र ही रहें। कुछ वर्ष पहले विद्यालय के पत्रिका हेतु बच्चों से उनका लिखा कुछ आमंत्रित किया गया था। अधिकतर बच्चे किसी और की लिखी कविताएं ला रहे थे जबकि एक छात्रा माँ पर आलेख लिख कर लाई थी। उसके लेखनी से उसके अंदर बैठे घबराहट को मैं देख पा रहा था जो हर किसी, जो पहली बार लिखता है के साथ होता है। उसे मैंने प्रेरित किया कि वो यही रचना दुबारा और बिना डरे लिखे। उसने लिखा और इतना भावयुक्त लिखा कि पढ़ कर आश्चर्य हुए बिना नहीं रहा जा सकता था। रचना प्रकाशित भी है। कला पर बच्चों के वक्तव्य सुन कर मन गदगद हो उठता है उम्मीद और बढ़ जाती है। सभी अभिभावकों से भी अपेक्षा है कि वो अपने बच्चों को शिक्षा के क्षेत्र में उनके भाव, विचार और उनके मन मुताबिक विषय में आगे बढ़ने में उनकी मदद करें ताकि बच्चे खुल कर अपने विषय के साथ अपने विचारों को भी जोड़ सकें और जीवन में बहुत आगे निकल सकें। नई शिक्षा नीति में निश्चित रूप से शिक्षा को लेकर बहुत कुछ परिवर्तन हुआ है और इससे बच्चों के अध्ययन, कला के सृजन पर बहुत प्रभाव पड़ने वाला है साथ ही साथ कला के प्रति लोगों के रवैया पर भी बदलाव होने वाला है।

मैंय्या मैं नहीं कमीशन खायों

व्यंग्य

लाल बहादुर श्रीवास्तव

लेखक व्यंग्यकार हैं।

समाचारो में पढ़ते पढ़ते एक सप्ताह में करीब दस बड़े पुल एक ही राज्य में बह गये ।फिर पढ़ते पढ़ते अन्य राज्यों में पुल बहने के आये दिन समाचार पढ़ने को मिल रहे है? ऐसा लग रहा है कोई प्रतियोगिता

जीतने की होड़ इन पुलों के बीच बिचोलियों ने डकार मार राशि खाकर आयोजित करवा दी हो?

बरसात में इन पुलों की असामायिक मौत पर कितने लोग कितनी निर्माण एजेंसियां दोषी है?

तत्काल कमेटी या जांच आयोग बैठा दिया जाता है।कमेटी ,जांच आयोग जब तक रिपोर्ट दे तब तक और न जाने कितने पुल दम तोड़ देते हैं।जिन पुलों पर से हमारी जिंदगी रोजाना गुजरती हो उन्हीं पुलों को हम स्वार्थ की खातिर मिनटों में गिरा देते हैं।

एक और हम ईमानदारी का ढिंढोरा पिटते है दूसरी और इन हरकतों से जरा भी बाज नहीं आते हैं।राष्ट्रीय सम्पत्ति का विनाश इतनी जल्दी देख शर्मशार जरा भी नहीं होते।आधारशिला से निर्माण तक न जाने कितने एक्जूटिव इंजीनियर खरे होकर खोटे हों जाते हैं ।इन खोटों का क्या तगड़ी सैटिंग में माहिर जुगाडु जो होते हैं।

हम एक ओर अंग्रेजों को गाली देते है।शौक से दीजिए ,उन्होंने मानवीय जुल्म हम पर किये थे।पर कभी बिल्डिंगों पुलों के साथ इतनी बदसलूकी उन्होंने नहीं की उन्हें मान सम्मान दिया ।आज भी आजादी के पहले की बिल्डिंगें पुल जीवित होकर चमचमा रहे हैं।चीन की दीवार को लांघने की कौशिशो में हम भ्रष्टाचार की चरण सीमा पार गये है।ऐसे में पुल ढ़हते रहेंगे अपनी जीवन लीला खत्म होते देख अपनी दुर्दशा पर आंसु बहाते रहेंगे। शोक संवेदनाएं व्यक्त करते रहेंगे ।बेचारे ये नव निर्मित पुल शैशव अवस्था में ही दिन प्रतिदिन उद्घाटन होने के पहले ही परलोक सिधार रहे हैं।ये कभी झूठ नहीं बोलते न ही सोसाईट करते हैं।

गीता को साक्षी मानकर झूठी कसमें खाने वाले दोषी अदालत से न जाने कैसे रिहा हो जाते हैं और पुल बेचारे ईश्वर की खाकर कसम ,मैय्या मैं नहीं माखन खायों की तर्ज पर ये कहते रह जाते है.....

मैय्या मैं नहीं कमीशन खायों ,
न खाई सीमेंट न खाई रेत बजरी
न लोहा सरिया खायों ।

हर साल भाद्रपद मास के कृष्ण पक्ष की अष्टमी तिथि को श्रीकृष्ण जन्माष्टमी का पर्व मनाया जाता है। धर्म ग्रंथों के अनुसार, द्वापर युग में इसी तिथि पर भगवान विष्णु ने श्रीकृष्ण के रूप में जन्म लिया था। तभी से हर साल इस तिथि पर जन्माष्टमी का पर्व मनाया जाता है। इस बार ये पर्व अगस्त 2024 के अंतिम सप्ताह में मनाया जाएगा।

सलीम -जावेद पर बनी एक रोचक वेबसिरीज़

फिल्म समीक्षा

आदित्य दुबे

(लेखक वेबसाइट ई-अंतर्भव में प्रबंध निदेशक हैं)

प्राइम वीडियो पर रिलीज तीन एपिसोड की डॉक्यू वेबसिरीज -'एंग्री यंग मेन' हिन्दी फिल्मों के दो लोकप्रिय कथा लेखकों सलीम और जावेद की लेखन यात्रा पर केन्द्रित है । यह वेबसिरीज़ उनके कृतित्व और व्यक्तित्व की आधिकारिक प्रस्तुति तो है ही, यह उनके रचनाकर्म की प्रभावोत्पादकता की गुत्थी सूलझाने की एक गंभीर कोशिश भी है ।

बालीवुड में एक समय वह भी था जब फिल्मों में लेखक को कोई तरजीह नहीं दी जाती थी । फिल्म में सब कुछ हीरो को ही समझा जाता था,बचा कुचा कुछ श्रेय हीरोइनऔर विलेन को मिलता था। फिल्म लेखक का तो नाम तक क्रेडिट रोल में नहीं दिया जाता था ।सलीम जावेद ने मगर यह तय किया कि अगर क्रेडिट नहीं तो काम नहीं और इस तरह सलीम जावेद ने राइटर्स को सम्मान दिलवाये जाने का अभियान छेड़ा ।

इस वेबसिरीज़ में इन्हीं स्टार रायटर सलीम जावेद की जोड़ी की तथा-कथा को बड़े रोचक अन्दाज में प्रस्तुत किया गया है । उनके फर्श से अर्श तक पहुँचने की कहानी. कई सुपरस्टार्स को बनाने की कहानी,उनके अलग होने की कहानी और हिन्दी सिनेमा में एक क्रांति की कहानी को एक वेबसिरीज़ की शक्ल में बुना गया है । तीन एपिसोड की इस सीरीज में सलीम जावेद के बारे में तमाम किस्से, तमाम बातें शेयर की गई हैं. जिनमें से कुछ आप जानते हैं और कुछ नहीं भी लेकिन जो भी है उसे देखने में दर्शकों को मज़ा आएगा । दीप्तकीर्ति चौधरी की लिखी किताब - 'रिटेन बाई सलीम जावेद' पढ़ चुके लोगों को उत्सुकता रही है कि प्राइम वीडियो की सिरीज 'एंग्री यंग मेन' क्या इसी किताब पर आधारित है? तो इसका जवाब होगा -' ना '। चौदह कार्यकारी निर्माताओं ने मिलकर उन दो लोगों पर ये डॉक्यू सीरीज बनाई है जिनके बारे में जोया अख्तर कहती हैं, उन्होंने चौवीस फिल्में लिखीं और बाईस सुपरहिट रहीं। सलीम खान की बेटी अलवीरा ने इस डॉक्यू सिरीज का बीज बोया। जोया ने इसको खाद पानी दिया और फिर लोग आते गए, कारवाँ बनता गया।इस डॉक्यू सिरीज को देखने के बाद यह तो समझा ही जा सकता है कि हिन्दी सिनेमा कहां राह से भटका है? जिन पर ये सिरीज बनी है वे दोनों महान लेखक अपनी अधिकतर बात हिन्दी, उर्दू मिश्रित हिंदुस्तानी जुबान में करते मिलते हैं और उनके बारे में बातें करने वाले तमाम फन्ने खां फर्राटेदार अंग्रेजी में...! इस सिरीज़ को बनाने वालों में सबसे ज्यादा तारीफ लायक काम अगर किसी ने किया है तो वह हैं इस सिरीज

की एडीटर गीता सिंह ने। एक उदाहरण देखिए- रणवीर सिंह उवाच् - आज मेरे पास बंगला, गाड़ी है, बैंक बैलेंस है... से शुरू करते हैं और ऑस्कर समारोह में खड़े ए आर रहमान बोलते हैं - 'मेरे पास मां है ' । रोंगटे खड़े हो जाते हैं इस अहसास पर। वीडियो एडिटिंग की ऐसी कुशलता गीता ने आगे भी 'सीता और गीता' लिखने वाले इन लेखकों की जीवनी पर बनी इस डॉक्यू सीरीज में दिखाई है। सिरीज़ में पहले एपिसोड के शुरू के आठ मिनट सैंतालीस सेकण्ड के हिस्से में करण जौहर के आने तक पच्चीस लोग बोल चुके होते हैं। इनमें से नोट करके रखे जाने लायक दो बातें हैं। पहली जो सलीम खान कहते हैं कि लेखन का शौक उन्हें दोस्तों के लिए चिट्ठियां लिखने से हुआ और दूसरी जो शत्रुघ्न सिन्हा कहते हैं कि सलीम-जावेद ने छोटे छोटे संवादों से अपनी कहानियों में जान भरी।

एक समीक्षक ने क्या खूब लिखा है कि यदि आपको सिनेमा से इश्क है, सिनेमा अगर आपके दिल में बसता है तो ये सिरीज देखकर मज़ा आ जाएगा । ये सिरीज़ आपको बहुत कुछ देकर जाएगी, जिंदगी का दर्शन सिखाकर जाएगी, ऐसा कुछ पढ़ाकर जाएगी जो किताबों और क्लासों में आप नहीं समझ सकते । ये सीरीज आपको वो देगी जो किसी किताब में नहीं मिलेगा । इतने सारे सितारों को एक साथ लाना और उनसे सलीम जावेद पर बात करना. ये किसी आम इंसान के बस की बात नहीं थी, और यही इस सिरीज की खूबी है कि हर कोई सलीम जावेद के बारे में दिल खोलकर बात कर रहा है. कुछ ऐसा बताने की कोशिश कर रहा है जो अनसुना है, और ये सुनिए, जरूर सुनिए, सीखिए और महसूस कीजिए कामयाबी की उस दास्तान को जिसने हिन्दी सिनेमा का चेहरा बदल दिया ।

क्या कलेक्टर के विरुद्ध शासन एक्शन ले पायेगा..?

नर्मदापुरम- संजीव डे राय

नर्मदापुरम कलेक्टर सुश्री मीना को निर्वाचन आयोग ने लोकसभा चुनाव में उत्कृष्ट कार्य करने पर प्रशंसा पत्र से गौरवान्वित किया निश्चित ही एक टीम के साथ निपटाया गया चुनावी कार्य उनकी प्रशंसा का कारण है ठीक उसी प्रकार मूंग खरीदी को लेकर कृषि विभाग और विपणन की टीम के साथ किये कार्य उनकी सेवा में कमी को लेकर शासन इस मामले में उनके विरुद्ध ऐक्शन लेगा जिससे भविष्य में कलेक्टर ऐसे गंभीर विषय के शिकार नहीं हो..? विधायक किसानों के मसीहा बनते हैं और किसानों के साथ छल हो गया वे खामोश है...! राधा कृष्ण वेयर हाउस के पास जब लाईसेंस नहीं था तो उसे उपार्जन केन्द्र कैसे बनाया गया..? एक बड़ा सवाल है जिसमें मूंग खरीदी के लिए स्लाट बुक हुए 400 किसानों ने 11

हजार क्विंटल मूंग बेची और आज भुगतान के लिए भटक रहे.? फिर मिलने गए किसानों से कलेक्टर रू-ब-रू नहीं हो रही ऐसा क्यों..? लगभग ग्यारह करोड़ रुपए का भुगतान किसानों का इस उपार्जन केन्द्र क्रमांक 58226252 पर अटक गया। किसान अब भुगतान के लिए परेशान हैं। किसानों के मसीहा सांसद दर्शन सिंह चौधरी सहित विधायक डॉ सीतासरन शर्मा इस मामले में शांत हैं ऐसा क्यों..? कलेक्टर किसानों से मिल नहीं रही, एसडीएम, विपणन अधिकारी, वेयरहाउस कारपोरेशन, कृषि विभाग कोई भी तो उन्हें इस मामले में सही जानकारी नहीं दे रहा जबकि राम गौर के पिता पांडेय अस्पताल में पैसे नहीं होन से इलाज के लिए ऐड़ी रगड़ रहे उनके इलाज में जो परेशानी आ रही यह राम गौर महसूस कर रहा। आखिर राधा कृष्ण वेयर हाउस संचालक मेघदीप गौर कौन है उसे लेकर प्रशासन सहित जनप्रतिनिधि ने खामोशी ओढ़ रखी..? उपार्जन केन्द्र बनाए जाते वक्त उपसंचालक कृषि अधिकारी की हरकतें समाचार-पत्र में उजागर होती रही कलेक्टर ने ध्यान नहीं दिया क्यों.. उपार्जन केन्द्र बामुश्किल वह भी देर से बन सके क्यों कलेक्टर ने मूंग खरीदी को गंभीरता से लिया ही नहीं जबकि मीडिया कह रही थी डिप्टी डायरेक्टर ऐग्रिकल्चर वेयर हाउस संचालकों से सेंटिंग कर नोट छाप रहे हैं वेयर हाउस संचालक उनके घर पहुंच रहे हैं। फिर यहां ध्यान देने वाली बात यह है कि किसान जब कोई खरीददारी करता है तो ओन लाइन खरीदी करता है फिर उपार्जन केन्द्र ओनलाइन क्यों नहीं बनाएं जा सकते, इस विषय पर प्रशासन और जनप्रतिनिधि खामोश क्यों रहे। और अब खुद प्रशासन राधा कृष्ण वेयर हाउस का लाईसेंस बनवाने के लिए दिल्ली चक्कर लगा रहा..

रसूखदारों ने कर रखा है शासकीय भूमि पर कब्जा

पट्टे के लिए भटक रहे हैं गरीब आवासहीन मजदूर

बैतूल/मुलताई। मैडम जी कामथ पंचायत में जिन रसूखदार लोगों के पास कई मकान, खेती बाड़ी ,ट्रैक्टर गाड़ी सब कुछ है, उन लोगों ने शासकीय भूमि पर अवैध कब्जा कर रखा है और हमारे पास रहने के लिए छत भी नहीं है फिर भी हमें इस शासकीय भूमि में से आवासीय पट्टे आवंटित नहीं किए जा रहे हैं। यह कहना है मुलताई नगर की सीमा से लगे ग्राम पंचायत कामथ के आवासहीन परिवारों का। शनिवार को कामथ के आवासहीन परिवार बड़ी संख्या में तहसील परिसर पहुंचकर मुख्यमंत्री के नाम ज्ञापन अनुविभागीय अधिकारी राजस्व अनीता पटेल को सौंपकर अपनी पीड़ा से अवगत कराया। आईएस प्रदर्शन में बड़ी संख्या में महिलाएं भी शामिल थी। कामथवासियों द्वारा सौंपे गए ज्ञापन में कहा गया है कि ग्राम पंचायत कामथ में प्रस्तावित मोक्षधाम के समीप स्थित भूमि खसरा नम्बर 107 रकबा 0.162 में से शासकीय पटटे ग्राम पंचायत के आवास हीन गरीब परिवारों को दिए जाएं। जिला कलेक्टर के आदेश से उक्त भूमि मोक्ष धाम के लिए स्वीकृत की गई है किंतु उक्त खसरा क्रमांक 107 भूमि पर अवैध कब्जाधारी लोगों द्वारा विरोध किया जा रहा है। जबकि खसरा नम्बर 107 से प्रस्तावित मोक्षधाम की दूरी लगभग 250 से 300 मीटर की दूरी है। खसरा नम्बर 107 में निवासरत लोगों के पास वैध दस्तावेज नहीं है वे लोग अवैध रूप से मकान निर्माण कर रह रहे है। हम ग्राम पंचायत कामथ के मजदूर वर्ग के ग्रामीण करीब 15 से 20 वर्षो से मजदूरी कर जीवन यापन कर रहे है लेकिन हमारे पास रहने की व्यवस्था नहीं है। उक्त भूमि खसरा नम्बर 107 पर प्रथम अधिकार हम गरीब भवनविहीन लोगों का बनता है। वर्तमान में खसरा नम्बर 107 पर अवैध रूप से रह रहे लोगों के परिवार के पास अन्यत्र पक्के मकान, प्लाट, कृषि भूमि एवं अन्य सुख सुविधा के साधन उपलब्ध है। पूर्व में खसरा नम्बर 107 ग्राम पंचायत कामथ के बच्चों के मोक्षधाम हेतु नियत की गई थी जिस पर अवैध अतिक्रमण हो चुका है। ज्ञापन सपना वालों में सजल शिवहरे, कुंडलीक साकरे, धनराज जायसवाल ,संतोष राठौड़, गोलू कुमरे, सरिता बाई, ज्योति उइके, गीताबाई, फुलवंती बाई, पार्वती कहार आदि प्रमुख है

तीन गांजा तस्करों को 10-10 साल का कठोर कारावास

बैतूल। विशेष न्यायाधीश (एनडीपीएस एक्ट) बैतूल ने आयसर ट्रक से 839.69 किलोग्राम मादक पदार्थ गांजा का अवैध परिवहन करने वाले आरोपियों को 10-10 वर्ष के कठोर कारावास एवं एक-एक लाख रुपये जुर्माने से दंडित किया है। प्रकरण में प्रदेश शासन की ओर से अपर लोक अभियोजक बलराम कुम्भारे ने पैरवी की। इस प्रकरण में प्रकाश यादला, कर्रा रत्नाराव उर्फ राजू एवं मेरगुमाला विजय साई को धारा 8ध्20 सहपठित धारा 29

(एनडीपीएस एक्ट) के अपराध में दोषी पाते हुए यह सजा सुनाई गई है। अभियोजन का मामला इस प्रकार है कि 06 अक्टूबर 2019 को राजस्व आसूचना जोनल यूनिट इंदौर के द्वारा मुखबिर सूचना के आधार पर मिलानपुर टोल गेट, बैतूल में आयशर ट्रक एपी-10 टी-9405 की सुबह 11.30 बजे रोककर तलाशी ली गई।

ट्रक में रखा था भारी मात्रा में गांजा- उक्त ट्रक को आरोपी प्रकाश यादला चला रहा था एवं ट्रक का क्लिनर कर्रा रत्नाराव था। ट्रक की तलाशी लेने पर ट्रक में कुल 839.69 किलोग्राम गांजा पाया गया। ट्रक में सवार दोनों आरोपियों ने बताया कि एक स्विफ्ट कार में विजय साई बैठा है। विजय साई की कार उनके ट्रक को निर्देशित करते हुए चल रही है। इस पर आरोपी विजय साई की कार को जब्त किया गया।

धर्म परिवर्तन का दबाव बनाने वाली महिला के खिलाफ थाने में हुई एफआईआर, प्रलोभन देने की थी शिकायत

एफआईआर के लिए विधायक को करना पड़ा हस्तक्षेप, हिंदू संगठनों ने आधी रात को घेरा थाना

संजय द्विवेदी बैतूल/ संजय जगताप शाहपुर। जिले के शाहपुर में बस में दो महिलाओं के बीच मामूली विवाद ने बड़ा रूप धारण कर लिया। पहले महिलाओं में तू-तू, मैं-मैं हुई, फिर दोनों के बीच बस और शाहपुर बसस्टैंड पर भी हाथापाई हुई, चूंकि इसमें एक महिला शाहपुर की थी, इसलिए बस के शाहपुर पहुचने पर मामले ने उस समय ज्यादा तूल पकड़ लिया, जब इटारसी से बस में बैठी दूसरी महिला पर ईसाई धर्म के बारे में समझाइश देने और धर्म परिवर्तन का दबाव बनाने के आरोप लगाए गए। इसके बाद मामला और अधिक गरमा गया। एएसपी कमला जोशी भी मौके पर पहुंची, इसके अलावा सारणी, पाथाखेड़ा, चिचोली, बोजादेही से भी पुलिस बल बुलाना पड़ा। इधर जानकारी मिलने के बाद खुद घोड़ाडोंगरी विधायक गंगा सज्जन सिंह उईके भी थाने पहुँची।

पांच थानों से पुलिस बल ने पहुंचकर संभाली व्यवस्था- शाहपुर में धर्मातरण से जुड़े मामले में बवाल मचने के बाद बैतूल से एएसपी कमला जोशी को मोर्चा संभालना पड़ा। चूंकि स्थानीय विधायक भी थाने पहुंच गई थी इसलिए एएसपी ने मामला बिगड़ता देख सारणी, पाथाखेड़ा, घोड़ाडोंगरी, चिचोली और बीजादेही से भी पुलिस बल शाहपुर बुला लिया। हिंदू संगठन की कार्यकओं की नाराजगी को देखते हुए तीन बजे तक

बड़ी संख्या में पुलिस बल शाहपुर थाने में तैनात रहा। इसके बाद सुबह मामला शांत होने पर ही पुलिस बल अपने संबंधित थानों में वापस हुआ।

धर्म परिवर्तन का दबाव बनाने वाली महिला के खिलाफ थाने में हुई एफआईआर- शाहपुर तहसील के पतोवापूरा की पीड़िता पूजा दुबे ने बताया कि वह बस में सफर कर रही थी, इटारसी की अनिता मोटवानी नामक महिला उन्हें ईसाई धर्म के बारे में बस में बताने लगी। उन्होंने आरोप लगाया कि उसने हिन्दू देवी-देवताओं के खिलाफ अपशब्द कहते हुए धर्म का अपमान किया, महिला द्वारा ईसाई धर्म अपनाने के लिए दबाव भी बनाने लगी और धर्म के आधार पर डराने और धमकाने का प्रयास किया। जब उनके द्वारा मना किया तो संबंधित महिला मारपीट पर उतारू हो गई और धमकी देने लगी। इससे मन में डर बैठ गया। इसी वजह महिला के खिलाफ शाहपुर थाने में शिकायत दर्ज कराने पहुंची। उन्होंने बताया कि धर्मांतरण से जुड़ा मामला सामने आने के बाद विधायक गंगा उइके को जानकारी मिली तो उन्होंने शाहपुर पुलिस द्वारा पूजा दुबे की रिपोर्ट पर मामला दर्ज न करने पर आपति जताते मामले में हस्तक्षेप किया। इस बीच क्षेत्र के हिंदू संगठन से जुड़े कार्यकर्ताओं को भी इस संबंध में जानकारी लगी तो रात आठ बजे के बाद बड़ी संख्या में कार्यकर्ता एकत्रित होने लगे। रात 11 बजे हिंदू संगठन के कई अन्य पदाधिकारी भी पहुंच गए। उन्होंने भी महिला की शिकायत पर धर्मांतरण करने वाली दूसरी महिला पर एफआईआर न होने पर नाराजगी जताई। बड़ी संख्या में कार्यकर्ता इसके विरोध में थाना घेरने का प्रयास करने लगे। उनको आरोप था कि पहले तो पुलिस ने महिला की शिकायत पर एफआईआर नहीं लिखी। इसके बाद महिला सब इंस्पेक्टर सोनम साहू ने डंडा निकालकर बाहर खड़े हिंदू संगठन के कार्यकर्ताओं को डरा धमकाकर बाहर निकालने का प्रयास किया। इस पर कार्यर्ता आग बबूला हो गए और नारेबाजी करने लगे। इसके बाद खुद विधायक गंगा उड़के देर रात थाने पहुंची और कार्यकर्ताओं से चर्चा कर संबंधितों के विरूद्ध कार्रवाई का आश्वासन दिया। मामले में पुलिस द्वारा एफआईआर दर्ज न करने और शिकायत न किये जाने का दबाव बनाया जा रहा था, जिसको लेकर विधायक द्वारा आपत्ति दर्ज करते हुए मामले में हस्तक्षेप करते हुए अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक को मौके पर बुलाया। अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक द्वारा मामले को संज्ञान में लिया तथा विवाद को शांत करवाकर दोषी महिला पर अपराध पंजीबद्ध करने हेतु थाना प्रभारी को निर्देशित किया। जिसके बाद पुलिस द्वारा बीएनस की धाराएं 296, 115(2), 351(3) और मध्यप्रदेश धार्मिक स्वतंत्रता अधिनियम 2021 की धारा 3, 4 के तहत मामला पंजीबद्ध कर लिया है।

इनका कहना

शाहपुर में एक महिला ने दूसरी महिला पर विवाद के बाद धर्मांतरण के आरोप लगाए। हमने जांच के बाद संबंधित महिला के खिलाफ एफआईआर के निर्देश दे दिए हैं।

- कमला जोशी, एएसपी बैतूल

अनुदान प्राप्त शिक्षण संस्थानों के शिक्षक वेतन को तरसे

शिक्षकों ने केंद्रीय राज्यमंत्री और विधायकों से लगाई न्याय की गुहार

बैतूल। अनुदान प्राप्त शिक्षण संस्थानों में कार्यरत शिक्षक और कर्मचारी पिछले दो महीनों से वेतन अनुदान ना मिलने के कारण गंभीर आर्थिक संकट का सामना कर रहे हैं। लोक शिक्षण संचालनालय के कुछ अधिकारियों ने 23 वर्षों के शिक्षण शुल्क की जानकारी संस्थाओं द्वारा न दिए जाने के कारण वेतन अनुदान रोक दिया है। इस स्थिति ने शिक्षकों और उनके परिवारों को अभावग्रस्त जीवन यापन करने पर मजबूर कर दिया है। शासन के आदेशों के अनुसार 1983-84 से कोई भी शिक्षण संस्था शैक्षणिक शुल्क की राशि नहीं लेगी और इसका पूरी तरह से पालन किया गया है। इसके बावजूद, कुछ संस्थाओं द्वारा जानकारी न दिए जाने का बहाना बनाकर दो महीने से वेतन अनुदान रोक दिया गया है।

शिक्षकों ने उठाया यह सवाल- इस पर शिक्षकों ने सवाल उठाते हुए कहा है कि क्या किसी जानकारी के अभाव में वेतन रोकना न्यायसंगत है? वेतन न मिलने से न केवल शिक्षक, बल्कि उनके पूरे परिवार आर्थिक बदहाली का सामना कर रहे हैं। इस स्थिति में, अनुदान प्राप्त शिक्षण संस्थानों के शिक्षकों और कर्मचारियों ने केंद्रीय मंत्री डीडी उइके, विधायक हेमंत खंडेलवाल, आमला विधायक योगेश पंडागरे, भाजपा जिला अध्यक्ष बबला शुक्ला, वरिष्ठ भाजपा नेता मोहित गर्ग, और पूर्व विधायक अलकेश आर्य से मिलकर अपनी समस्याओं से अवगत कराया। शिक्षकों ने अपनी पीड़ा बताई और उनसे न्याय की गुहार लगाई। सभी जनप्रतिनिधियों ने शिक्षकों को आश्वासन दिया है कि वे जल्द ही संबंधित अधिकारियों से चर्चा करेंगे और शिक्षकों का लंबित वेतन अनुदान जारी कराने का प्रयास करेंगे। हालांकि, केंद्रीय मंत्री डीडी उइके से दूरभाष पर संपर्क करने का प्रयास किया गया, लेकिन किसी कारणवश संपर्क नहीं हो पाया। इसके बावजूद, विधायकों ने अपनी ओर से पत्र भेजकर शिक्षकों के प्रति सहानुभूति जताई और वेतन अनुदान जारी करने की अनुशंसा की है।

मध्य प्रदेश माध्यमिक शिक्षक संघ अनुदान प्राप्त के प्रतिनिधि मंडल में प्रदेश कोषाध्यक्ष नारायण अडलक, नरेंद्र ठाकुर, देवेंद्र पाटिल,संदीप कौशिक देवेंद्र ठाकुर, अजय शुक्ला,मनीष सरसोदे, ललित गंगारे, नवनीत साहू, रामचरण उइके और अन्य शिक्षक शामिल थे। उन्होंने सभी जनप्रतिनिधियों से अनुरोध किया कि इस मुद्दे को प्राथमिकता से हल किया जाए, ताकि शिक्षकों को उनके लंबित वेतन का शीघ्र भुगतान हो सके और उनकी आर्थिक स्थिति में सुधार आ सके।

छात्राओं को मिला जेवरों से भरा बैग

बैतूल। वैसे तो नीयत बिगाड़ने के लिए सौ रुपये का नोट ही काफी होता है। लेकिन, कुछ लोग ऐसे भी होते हैं जिनके लिए लाखों करोड़ों रुपये भी ईमानदारी की राह में कोई मायने नहीं रखते। बैतूल जिले के मुलताई क्षेत्र की 2 कॉलेज छात्राओं ने भी ईमानदारी की ऐसी ही मिसाल पेश की। दरअसल, मुलताई नगर के रेल्वे स्टेशन की सीढ़ी पर कॉलेज से आ रही दो छात्राओं को एक लेडीज बैग पड़ा दिखाई दिया। जिसे लेने कोई नहीं पहुंचा तो दोनों छात्राओं ने उक्त बैग को थाना लाकर पुलिस को सौंप दिया।

इस बैग में कुछ नकद राशि सहित सोने के जेवर कीमत एक लाख रुपए के लगभग पाए गए। बैग में दो पेन ड्राइव भी प्राप्त हुई थी। जिसके आधार पर पुलिस द्वारा बैग के वास्तविक मालिक को ढूंढ निकाला गया। जिसे थाना बुलाकर कॉलेज की छात्राओं के समक्ष सौंप दिया गया। एसआई छत्रपाल धुर्वे ने बताया कि पिछले शुक्रवार नगर के सरकारी कॉलेज में अध्यनरत अंजली कावड़े और रितु टेकाम को रेल्वे स्टेशन की सीढ़ी पर एक बैग मिला था। दोनों छात्राओं ने ईमानदारी की मिसाल पेश करते हुए बैग को थाना लाकर पुलिस को सौंप दिया था।

पैन ड्राइव के आधार पर तलाशा- बैग से मिली पेन ड्राइव की जांच पड़ताल कर जौलखेड़ा निवासी किरण पत्नी वीरेंद्र डोंगरदिए नामक महिला को थाना बुलाकर दोनों छात्राओं के समक्ष बैग में मिले नकदी और सोने के जेवर सहित पेन ड्राइव सौंप दी गई। वहीं कॉलेज की छात्राओं द्वारा पेश की गई ईमानदारी की मिसाल की पुलिस द्वारा प्रशंसा कर उनके उज्जवल भविष्य की कामना की गई। हर कोई इन छात्राओं की ईमानदारी की प्रशंसा कर रहा है।

डिवाइन इंग्लिश स्कूल में श्रद्धाभाव के साथ मनाया श्रीकृष्ण जन्माष्टमी

बैतूल। मध्यप्रदेश की यह धरा कई अर्थों में पावन और अद्भुत है। इसका महत्व इस बात से समझा जा सकता है कि नटखट कान्हा को कृष्ण बनने के लिए ज्ञान प्राप्ति हेतु यहीं आना पड़ था। यह बात श्रीकृष्ण जन्माष्टमी के पावन पर्व पर आयोजित कार्यक्रम में डिवाईन इंग्लिश स्कूल के संचालक अजय पवार ने शनिवार को कही। ज्ञात रहे कि प्रदेश शासन के निर्देशानुसार सभी विद्यालयों में जन्माष्टमी का पर्व मनाया जा रहा है, जिसमें स्कूल की प्रिंसी सोनी को प्रथम स्थान प्राप्त हुआ। इस दौरान विद्यालय परिसर गोकुल और बच्चे कृष्ण के रूप में हो गए। स्कूल में पूरे दिन जन्माष्टमी का कार्यक्रम चलता रहा।

श्री पवार ने कहा कि कृष्ण का चरित्र हमें सदियों से प्रेरणा देता रहा है। उन्होंने भगवान कृष्ण के बाल्यकाल और गुरूकुल की कहानी सुनाते हुए कहा कि शिक्षा पूरी होने के बाद जब वे गुरु दक्षिणा देने के लिए गुरू के पास गए तो उन्होंने अपने पुत्र को मांग लिया, जिसकी मृत्यु हो चुकी थी। भगवान यमराज से गुरूपुत्र को वापस लाए। इस पर किसी ने गुरू सांदीपनि से पूछा कि यह कार्य तो आप भी कर सकते थे। इस पर गुरुजी ने उत्तर दिया कि वह मेरी सार्थकता नहीं होती। मेरी सार्थकता एक योग्य और सामर्थ्यवान शिष्य बनाना है। उन्होंने विद्यालय के बच्चों से वार्तालाप किया और उनकी शंकाओं का समाधान भी किया। स्कूल में बड़ी संख्या में बच्चे राधा-कृष्ण के रूप में आए।

जन्माष्टमी की तैयारियां शुरु, सजने लगे कृष्ण मंदिर

26 अगस्त की रात 12 बजे मनेगा जन्मोत्सव, फुटेगी मटकी

बैतूल। जिले में कृष्ण जन्मोत्सव को लेकर तैयारियां शुरू हो गई है। कृष्ण मंदिर की सजावट करने में जुटे है। युवाओं को सबसे ज्यादा कृष्ण जन्माष्टमी के आने का इंतजार है। जन्माष्टमी की पूरे जिले में धूम रहेगी। जन्माष्टमी के नजदीक आते ही मंदिर समितियों द्वारा रंग रोगन के साथ-साथ सजावट का काम भी शुरु कर दिया है। फूलों के साथ-साथ मंदिरों में आकर्षक विद्युत साज-सज्जा की जा रही है। जिला मुख्यालय पर 25 अगस्त से ही मंदिरों में रामायण पाठ प्रारंभ हो जाएगा। जन्मोत्सव को लेकर युवाओं में खासा उत्साह दिखाई दे रहा है। भारत के पांचवे धाम बालाजीपुरम में भी कृष्ण जन्मोत्सव को लेकर तैयारियां शुरु हो गई है। मंदिर के मुख्य पुजारी असीम पंडा स्वामी ने बतायाि क समिति द्वारा जोरशोर से तैयारियां की जा रही है। यहां जन्माष्टमी के दिन हजारों श्रद्धालु जन्मोत्सव के मौके पर पहुंचेंगे। इधर बैतूल शहर के सदर स्थित श्रीराधाकृष्ण मंदिर गोकुलधाम में जन्माष्टमी के मौके पर 25 अगस्त रविवार दोपहर को अखंड रामायण पाठ प्रारंभ होगा। 26 अगस्त सोमवार को अखंड रामायण पाठ का समापन होगा। रात्रि 12 बजे कृष्ण जन्मोत्सव मनेगा। अगले दिन 27 अगस्त को नंद महोत्सव एवं भव्य शोभायात्रा निकाली जाएगी। सदर स्थित बैल बाजार में मटकी फोड़ का आयोजन होगा। श्री राधाकृष्ण मंदिर समिति सदर और आयोजक जय भोले रामायण मंडल गोकुलधाम सदर ने आयोजन को लेकर तैयारियां की जा रही हैं।

इधर गंज मंडी स्थित कृष्ण मंदिर में भी कृष्ण जन्माष्टमी को लेकर तैयारियां शुरु हो गई है। यहां पर भी कृष्ण जन्मोत्सव की धूम रहेगी। पूजा-अर्चना के लिए श्रद्धालुओं की भीड़ को देखते हुए व्यवस्था बनाई जा रही है। गंज मंडी स्थित मंदिर की भी आकर्षक विद्युत साज-सज्जा की जा रही है। कृष्ण मंदिरों में जन्माष्टमी के दिन सुबह से ही श्रद्धालुओं का ताता लगा रहेगा। श्रद्धालुओं को पूजा-अर्चना करने में कोई परेशानी ना हो इसे देखते हुए व्यवस्था बनाई जा रही है।

सलीम-जावेद की जोड़ी जुड़ने और टूटने की दास्तां

हिंदी फ़िल्मी दुनिया में सलीम-जावेद अनजान नाम नहीं है। ये न तो फिल्मों में नायक रहे और न डायरेक्टर। फिल्म लेखकों की ये जोड़ी इतनी लोकप्रिय रही कि फिल्मों के हिट होने का श्रेय इन्हें दिया जाता रहा। जंजीर, दीवार और शोले जैसी फिल्मों की कहानी इसी जोड़ी ने लिखी। ये लेखकों की पहली जोड़ी थी, जिसका नाम फिल्म के पोस्टरों पर लिखा गया। 1982 में दोनों की हिट जोड़ी टूट गई, दोस्ती आज भी बरकरार है। सलीम-जावेद की जोड़ी टूटने की कई कहानियां है।

शोले, दीवार, जंजीर जैसी कई बेहतरीन फिल्मों के डायलॉग लिखने वाली सलीम जावेद की जोड़ी ने कुल 24 फिल्में लिखी थीं, जिनमें से बैक-टु-बैक 22 ब्लॉकबस्टर रही थीं। हालांकि एक समय ऐसा आया जब ये ब्लॉकबस्टर जोड़ी अचानक टूट गई। हाल ही में सलीम-जावेद की राइटर जोड़ी पर बनी डॉक्यूसीरीज एंग्री यंग मैन अमेजन प्राइम पर स्ट्रीम हुई है, जिसमें सलमान खान ने बताया है कि जावेद साहब से जोड़ी टूटने पर सलीम साहब डिस्टर्ब हो गए थे।

हाल ही में स्ट्रीम हुए एपिसोड में सलमान ने सलीम-जावेद की जोड़ी टूटने पर पिता सलीम का पहला रिएक्शन बताया है। सलमान ने बताया है कि जिस दिन पार्टनरशिप टूटी तो उनके पिता सलीम साहब घर आए, वो काफी डिस्टर्ब थे। सलमान खान डाइनिंग टेबल पर बैठे थे। सलीम साहब आए और उन्होंने कहा, जावेद और मेरी पार्टनरशिप (इतना बोलते ही सलीम साहब खामोश हो गए) फिर कहा, वो अलग होना चाहते हैं। सलमान ने उनसे पूछा- क्यों? आपने कुछ नहीं कहा? इस पर सलीम साहब ने इनकार कर दिया। सलमान ने फिर पूछा, कोई वजह तो होगी। तो इसके जवाब में उन्होंने कहा, अगर उन्हें जाना है तो जाना है। इतना कहते ही सलीम साहब खामोश हो गए।

जावेद अख्तर की पहली पत्नी हनी ईरानी ने भी डॉक्यूमेंट्री के एक हिस्से में जोड़ी टूटने पर जावेद साहब का रिएक्शन बताया था। एक दिन जावेद साहब घर आए और कहा, मेरे पास आपके लिए एक बुरी खबर है। हनी ईरानी को

लगा कि जावेद साहब ने फिर गाड़ी ठोंक दी। जब उन्होंने ये सवाल किया, तो जावेद साहब ने कहा, नहीं, मैं सलीम साहब से अलग हो गया

हूं। जब हनी ईरानी ने इसकी वजह जाननी चाही, तो जावेद साहब ने कहा, दोबारा मुझसे ये सवाल मत पूछना।

सलीम-जावेद की जोड़ी की लिखी फिल्म जंजीर से ही अमिताभ बच्चन स्टार बने थे। जब सालों बाद उसी जोड़ी ने अमिताभ बच्चन को अपनी लिखी फिल्म मिस्टर इंडिया में काम करने को कहा, तो उन्होंने साफ इनकार कर दिया। अमिताभ ने कहा, मैं हीरो हूं, लोग मुझे देखने आते हैं, मेरी आवाज सुनने कौन आए। जाहिर है मिस्टर इंडिया का कॉन्सेप्ट 80 के दशक के लिए काफी अटपटा था। फिक्शन फिल्में उस समय तक नाम मात्र की बनी थीं, जो ज्यादातर फ्लॉप ही थीं।

लेकिन, अमिताभ के इनकार से सलीम-जावेद बेहद नाराज हुए। जावेद अख्तर ने फैसला कर लिया कि अब अमिताभ बच्चन के साथ काम नहीं किया जाएगा, हालांकि सलीम साहब इस फैसले पर राजी नहीं थे। कुछ दिनों बाद जावेद साहब, अमिताभ बच्चन के घर पर हुई होली पार्टी में पहुंचे और उनसे कहा कि सलीम खान उनके साथ कभी काम नहीं करना चाहते। इस गलतफहमी की वजह से जोड़ी के कामकाजी रिश्ते बिगड़ गए और दोनों ने फिर कभी साथ काम नहीं किया।

बजरंगी भाईजान का सीक्वल नहीं बनेगा

सलमान खान इन दिनों अपनी अपकमिंग फिल्म सिकंदर की शूटिंग में व्यस्त हैं। यह फिल्म साल 2025 में ईद के मौके पर रिलीज होगी। इस बीच सलमान खान की साल 2015 में रिलीज हुई बजरंगी भाईजान को लेकर एक बड़ी खबर सामने आ रही। हाल ही में एक इंटरव्यू के दौरान डायरेक्टर कबीर खान ने फिल्म के सीक्वल पर चुप्पी तोड़ी। उन्होंने कहा कि ब्लॉकबस्टर फिल्मों को सीक्वल की जरूरत नहीं होती।

कबीर खान के निर्देशन में बनी फिल्म बजरंगी भाईजान में एक्टर सलमान खान के साथ एक्ट्रेस करीना कपूर और हर्षाली मल्होत्रा लीड रोल में थे। 2015 में रिलीज हुई इस फिल्म ने भारत और पाकिस्तान दोनों ही देशों के लोगों को इमोशनली जोड़ दिया था। अब एक इंटरव्यू में कबीर खान ने कहा कि किसी भी फिल्म का सीक्वल तभी बनना चाहिए जब अच्छी स्टोरी मिले, ताकि उसी कहानी को आगे बढ़ाया जा सके। उन्होंने कहा कि हर ब्लॉकबस्टर फिल्म को सीक्वल की जरूरत नहीं

होती और यही कारण है कि मैंने अपने करियर में कोई भी सीक्वल नहीं बनाए। इसके अलावा डायरेक्टर ने कहा कि मैं ये कहने वाला पहला शख्स हूं, जो कहता है कि हर एक सफल फिल्म का सीक्वल नहीं बनाना चाहिए।

कबीर खान ने आगे कहा कि मैंने कभी नहीं कहा कि मैं इस फिल्म के सीक्वल पर कोई काम कर रहा हूं। मैंने तो केवल इतना कहा है कि अगर कोई अच्छी स्क्रिप्ट मिलती है, जो कहानी को आगे बढ़ाएगी तभी मैं बजरंगी भाईजान के सीक्वल को बनाना पसंद करूंगा। 90 करोड़ के बजट में बनी सलमान खान, करीना कपूर और नवाजुद्दीन सिद्दीकी की फिल्म बजरंगी भाईजान ने भारत में 320.25 करोड़ रुपये की नेट कमाई की थी। वर्ल्डवाइड स्तर पर भी फिल्म ने छप्पर फाड़ कमाई की। इस फिल्म ने वर्ल्डवाइड स्तर पर 900 करोड़ रुपये का आंकड़ा पार किया था।

रियल बॉक्स

विवादों में क्यों रही इंदिरा गांधी पर बनी फ़िल्में!

हेमंत पाल
लेखक 'सुबह सवेरे' इंदौर के स्थानीय संपादक है।

सौ साल से ज्यादा पुरानी फ़िल्मी दुनिया में बरसों से राजनीतिक किरदारों पर फ़िल्में बनती रही है। कभी उन पर बायोपिक बनी तो कभी इन किरदारों को अलग ही कलेवर में परदे पर दिखाया गया। ऐसी ही एक किरदार है इंदिरा गांधी, जिन्हें कई फिल्मों में अलग-अलग तरह से फिल्माया गया। लेकिन, अभी तक इंदिरा गांधी पर कोई ऐसी फिल्म नहीं बनी, जिसमें उनके राजनीतिक चरित्र का सकारात्मक पक्ष दिखाया हो। किस्सा कुर्सी का से लगाकर इमरजेंसी तक बनी हर फिल्म को लेकर विवाद हुए। इमरजेंसी में भी इंदिरा गांधी का नेगेटिव किरदार दिखाने की कोशिश की गई। इसमें कंगना रनौत ने इंदिरा गांधी का किरदार निभाया, जिनकी राजनीतिक प्रतिबद्धता कभी इंदिरा गांधी की पार्टी से मेल नहीं खाती! शुरू से ही इस बात की आशंका थी कि यह फिल्म विवाद का कारण बनेगी और वही हुआ। फिल्म में 1975 के दौरान इमरजेंसी का कथानक है, जब देश में अलग राजनीतिक हालात बने थे।

गुलजार की आंधी से लगाकर अमृत नाहटा की किस्सा कुर्सी का तक में दर्शकों ने इंदिरा गांधी को देखा। कुछ दूसरी फिल्मों में भी इंदिरा गांधी दिखाई दी हैं। दरअसल, इतिहास के कुछ पात्र ऐसे होते हैं जिन्हें अच्छे या बुरे किसी न किसी रूप में हमेशा याद किया जाता रहा और आगे भी याद किया जाएगा। इंदिरा गांधी इतिहास में दर्ज ऐसी ही महिला है, जिन्हें हमेशा याद किया जाता रहा है। कभी दुर्गा के नाम से प्रसिद्ध इंदिरा गांधी के राजनीतिक करियर का केवल एक ही स्याह पन्ना था देश में इमरजेंसी लगाने का फैसला। इसके लिए उन्हें साढ़े चार दशक बाद भी कोसा जाता है। देखा जाए तो अब इमरजेंसी को याद करने या उसकी यादों को दोहराने को कोई औचित्य नहीं है। फिर भी देश की राजनीति ऐसी है कि इसे जरूरी समझा जाने लगा। हर साल जून का अंतिम सप्ताह आते ही तत्कालीन सरकार के इस फैसले को कोसा जाता हैं।

इस फिल्म को लेकर राजनीति में आई अभिनेत्री कंगना रनौत इन दिनों चर्चा में हैं। वे रोज की अपनी बयानबाजी से तो सुर्खियों में बनी ही रहती हैं, पर फ़िलहाल उनके ख़बरों में छाए रहने का कारण उनकी नई फिल्म इमरजेंसी है। इंदिरा गांधी के इस फैसले की दशकों से अलग-अलग तरह से व्याख्या होती रही है। यही वजह है कि फिल्म रिलीज से पहले विवादों में आ गई। हाल ही में फिल्म का ट्रेलर रिलीज हुआ। इसके सामने आने के बाद से ही फिल्म रिलीज से पहले ही मुश्किल में आ रही है। ट्रेलर देखने के बाद सिखों ने फिल्म को लेकर अपना विरोध दर्ज कराया। सिखों के धार्मिक संगठन ने फिल्म की फिर से समीक्षा करने की अपील की। यह भी कहा गया कि सिख समुदाय को बदनाम नहीं किया जाना चाहिए। 'इमरजेंसी' 6 सितंबर को सिनेमाघरों में रिलीज होने वाली है। लेकिन, रिलीज से पहले पंजाब में विवाद शुरू हो गया।

फिल्म पर सिखों को गलत तरीके से पेश करने का आरोप लगाते हुए इस पर तत्काल प्रतिबंध लगाने की मांग भी की गई। फिल्म सेंसरशिप में अपनाए जाने वाले दोहरे मानकों की आलोचना की जा रही है। एक तरफ मानवाधिकारों की बात करने वाले सिख कार्यकर्ता भाई जसवंत सिंह खालड़ा के जीवन पर बनी फिल्म पंजाब 95 की रिलीज को 85 कट के बाद भी मंजूरी नहीं दी गई। जबकि, सिख समुदाय के बारे में गलत तथ्य पेश करने वाली इमरजेंसी फिल्म को तत्काल रिलीज किया जा रहा। कहा गया कि यह दोहरे मापदंड देशहित में नहीं हैं। फिल्म का ट्रेलर सामने आने के बाद विरोध का कारण यह है कि इसमें एक

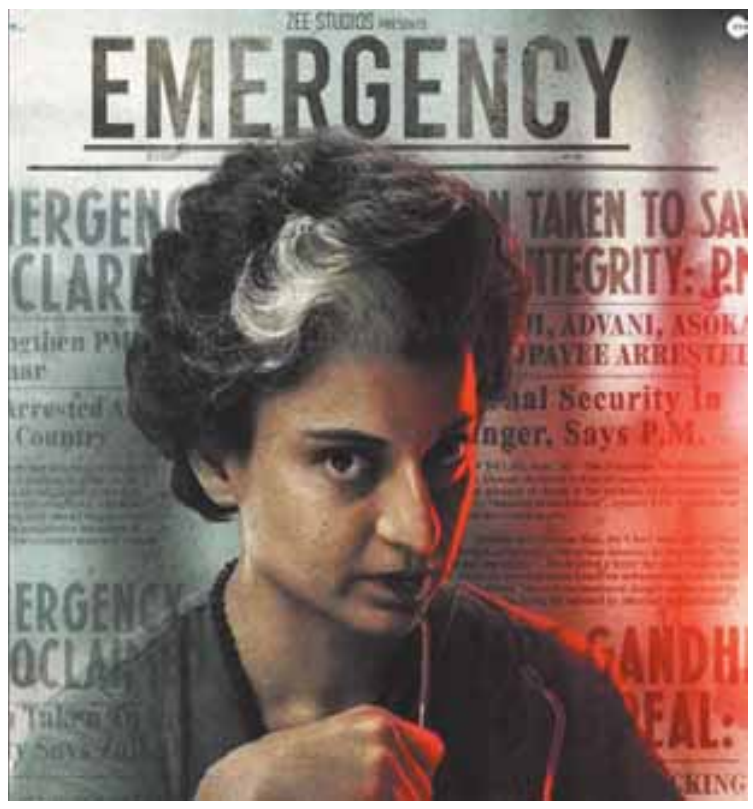

सिख चरित्र विवादास्पद संवाद बोलता है, जिसे लेकर पंजाब में विरोध की आवाजें उठी। फिल्म को सिख विरोधी बताया गया। यह पहली बार नहीं है, जब फिल्मों में सिख किरदारों का गलत चित्रण किया गया है। इस फिल्म में जो दिखाया गया उससे उनकी भावनाओं को ठेस पहुंची है। फिल्म पर बैन लगाने के साथ यह भी कहा गया कि यह सुनिश्चित किया जाना चाहिए कि सिख विरोधी भावनाओं वाली कोई भी फिल्म भविष्य में रिलीज न हो।

सिखों का कहना है कि सेंसर बोर्ड में कोई सिख सदस्य नहीं हैं, इसलिए ऐसी स्थिति बनती है। इसलिए सेंसर बोर्ड में सिख सदस्यों को भी शामिल किया जाए। सिखों के धार्मिक संगठन ने फिल्म को रिलीज न करने की चेतावनी भी दी। फिल्म की वजह से कंगना रनौत भी सिख समुदाय के निशाने पर आ गई। आरोप लगाया गया कि सिख विरोधी और पंजाब विरोधी अभिव्यक्तियों के कारण विवादों में रहने वाली अभिनेत्री कंगना रनौत ने जानबूझकर सिखों को गलत चित्रित करने के इरादे से इस फिल्म को बनाया है। इसे सिख समुदाय कभी बर्दाश्त नहीं करेगा। उन्होंने कंगना रनौत पर धार्मिक भावनाएं भड़काने का आरोप लगाया। फिल्म के कथानक को लेकर सिख समुदाय को ज्यादा विरोध है। कहा गया कि 1984 के शहीदों के बारे में सिख विरोधी कहानी बनाकर देश का अपमान करने का काम किया। देश 1984 की सिख विरोधी क्रूरता को कभी नहीं भूल सकता और संत जरनैल सिंह भिंडरावाले को तो राष्ट्रीय शहीद घोषित किया गया है, जबकि कंगना रनौत की फिल्म उनके चरित्र को मारने की कोशिश की। फिल्म में जानबूझकर सिखों के चरित्र को आतंकवादी के रूप में गलत तरीके से प्रस्तुत किया गया, जो गहरी साजिश का हिस्सा है।

इंदिरा गांधी सरकार की इमरजेंसी पर एक फिल्म किस्सा कुर्सी का भी बनी थी। फिल्म का डायरेक्शन अमृत नाहटा ने किया था और भगवंत देशपांडे, विजय कश्मीरी और बाबा मजगांवकर प्रोड्यूसर थे। कहा जाता है कि इस फिल्म से संजय गांधी इतना नाराज हुए थे कि फिल्म की ओरिजनल और बाकी सारे प्रिंट्स तक जलवा दिए थे। इस वजह से संजय गांधी पर 11 महीने तक केस चला। 27 फरवरी 1979 को कोर्ट का फैसला आया और उन्हें 25 महीने की जेल की सजा सुनाई गई। बाद में इसे शबाना आजमी और मनोहर सिंह को लेकर दोबारा शूट किया गया और आपातकाल के नाम पर खूब प्रचारित भी किया गया। इसके बावजूद फिल्म को दर्शक नहीं मिले। जहां भी यह फिल्म प्रदर्शित हुई वितरकों को घाटा ही देकर गई। मधुर भंडारकर की इंदू सरकार की कहानी भी कुछ ऐसी ही थी। फिल्म में 1975 में इंदिरा गांधी सरकार द्वारा लगाई गई इमरजेंसी के हालात दिखाए गए थे। इस फिल्म को भी ट्रेलर लॉन्च होने के बाद ही देशभर में विरोध झेलना पड़ा था। विरोध इतना ज्यादा बढ़ा कि लीगल नोटिस से लेकर पुतला फूंकने तक का निर्देशक मधुर भंडारकर को विरोध का सामना करना पड़ा था। यानी जब भी इस विषय को लेकर फिल्म बनेगी किसी न किसी बहाने उसका विरोध तो होगा!

- hemantpal60@gmail.com/ 9755499919

कृष्ण लीला से भी परदा हुआ रंगीला

अशोक जोशी

भगवान कृष्ण के जीवन में जितने रंग हैं, उनसे दर्जनों फिल्में बनाई जा सकती हैं। लेकिन, हमारे यहां अभी तक ऐसी कोई भव्य फिल्म नहीं आई जो अंतरराष्ट्रीय स्तर पर बनाई गई हो। कुछ फिल्मकारों ने कृष्ण चरित्र के बारे में दिग्गज सितारों

को लेकर भव्य फिल्में बनाने की घोषणा जरूर की, पर अभी ऐसी कोई भी घोषणा परदे पर विशालता के साथ उतारी नहीं जा सकी। बीआर चोपड़ा ने जरूर छोटे परदे पर समय के माध्यम से महाभारत प्रस्तुत कर उन दिनों रविवार की सुबह कुछ समय के लिए समय को रोकने का प्रयास जरूर किया था।

यदि कृष्ण लीला पर आधारित फिल्मों की बात की जाए तो इसकी शुरुआत तब से ही हुई, जब से देश में फिल्मों का निर्माण शुरू हुआ था। हिन्दी सिनेमा के पितामाह दादासाहब फालके ने पौराणिक विषयों को ही सबसे पहले सैल्यूलाइड पर उतारा था। उन्होंने 106 साल पहले 1918 में कृष्ण जन्म पर आधारित बर्थ आफ श्री कृष्णा और अगले साल 1919 में कालिया मर्दन का निर्माण कर सिनेमा को कृष्ण अर्पित किया था। तब से आज तक यह विषय फिल्मों में लगातार जारी है।

कृष्ण ऐसा चरित्र है जिसे प्रदर्शित करने के लिए किसी तरह के संवाद की आवश्यकता नहीं होती। केवल भाव-भंगिमाओं से ही कृष्ण लीला को प्रदर्शित किया जा सकता है। यही कारण है कि नाट्यशास्त्र में कृष्ण लीला को प्रधानता मिली। नृत्य में भी भाव भंगिमा के माध्यम से कृष्ण लीला प्रस्तुत की जाती रही है। जब फिल्मों को आवाज नहीं मिली, तब कृष्ण चरित्र उनके लिए सबसे ज्यादा आसान विषय था। यही कारण है कि अधिकांश फिल्में कृष्ण चरित्र पर आधारित हुआ करती थी। 1934 में कृष्ण अर्जुन युद्ध ने सफलता के झंडे गाडे तो आजाद भारत में प्रदर्शित पहली कृष्ण चरित्र फिल्म कृष्ण-सुदामा ने 1947 और कृष्ण रुक्मणि ने 1949 में दर्शकों का खूब मनोरंजन किया।

आज सिनेमा का स्वरूप बदल गया और सिनेकारों ने भी समय के साथ चलते हुए कृष्ण को बदलते स्वरूप में कभी कृष्णा तो कभी कृष्णा और कभी कृष के रूप में प्रस्तुत किया। कृष्ण के नाम पर बलराम श्रीकृष्ण, किशन कन्हैया और कन्हैया जैसी फिल्मे तो बनी साथ ही महाभारत, मीरा, सुदामा जैसी फिल्मों का

भी निर्माण हुआ। एक दौर ऐसा भी आया, जब फिल्म में भगवान कृष्ण खुद कलयुग में अवतरित होकर नायक नायिका को दिशा दिखाते है। संजीव कुमार की फिल्म ये जो है जिंदगी में इंसान और भगवान के इस साथ को बहुत सुंदरता से दर्शाया गया था जिसमें विक्रम गोखले ने कुटिल मुस्कान और चुटीले संवादों से रंग भरा था।

हाल ही में अजय देवगन और परेश रावल की फिल्म ओ माय गॉड में भी इंसान और भगवान की मजेदार भिड़ंत बताई गई थी। इसमें अक्षय कुमार ने कृष्ण को एक नए अवतार में पेश किया था। पहले ज्यादातर फिल्मों में साहू मोडक कृष्ण की भूमिका करते दिखाई देते थे। उसके बाद कुछ फिल्मों में महिपाल ने यह रूप अपनाया। एक फिल्म में तो विश्वजीत कृष्ण बने थे और तीन साल पहले इम्तियाज अली ने राधा-कृष्ण पर फिल्म बनाने की घोषणा की थी जो अभी तक मूर्त रूप नहीं ले सकी है।

कृष्ण पर पूरी फिल्म ही नहीं, कृष्ण लीला को भी फिल्मों में कथा या गीतों के रूप में प्रस्तुत किया जाता रहा है। हिंदी फिल्मों में जब कभी नायक संकट में होता है, तो उसे भगवान याद आते हैं। लेकिन, कृष्ण ऐसे भगवान है जो संकट ही नहीं मौज मस्ती और प्रेम प्रसंग के दौरान भी गीतों के माध्यम से परदे पर अपना स्वरूप प्रस्तुत करते रहे हैं। लगभग सभी संगीतकारों ने भगवान कृष्ण को अपने गीतों में

सम्मान दिया है। यदि मामला छेड़छाड़ का हो तो मोहे पनघट पर नंदलाल छेड़ गयो रे और मधुबन में राधिका नाचे रे जैसे गीतों की रचना होती है।

बाल लीला हो तो कन्हैया किसको कहेगा तू मैया, यशोमती मैया से बोले नंदलाला और बडा नटखट है रे किशन कन्हैया जैसे गीत परदे पर गूंजते है। यदि नायिका अपनी मदद के लिए सब जगह से निराश हो चुकी होती है तो वह शागिर्द सायरा बानो की तरह गुहार करने लगती है कान्हा कान्हा आन पड़ी तोरे द्वार। यदि उसे प्रेम में ईर्ष्या होने लगती है, तो वह लगान की नायिका की तरह शिकायत करती है राधा कैसे न जले। प्रेम त्रिकोण में फंसी नायिका को भी भगवान ही याद आते हैं, तभी तो वह एक राधा एक मीरा या श्याम तेरी बंसी पुकारे राधा नाम लोग करे मीरा को यूंही बदनाम गा पड़ती है।

त्योहारों के साथ भी कृष्ण कन्हैया का गहरा संबंध है। यही कारण है कि फिल्मों में जब होली का दृश्य होता है तो भी गीत में कृष्ण ही होते हैं। बिरज में होली खेले नंदलाल तो जन्माष्टमी में दही हांडी का दृश्य हो, तो गोविन्दा बना नायक कभी गोविन्दा आला रे आला तो कभी शोर मच गया शोर देखो आया माखन चोर, मच गया शोर सारी नगरी रे आया बिरज का बांका संभाल तेरी गगरी रे, तीन बत्ती वाला गोविंदा आला, आला रे आला गोविन्दा आला जैसे गीत गूंजने लगते हैं।

'अब के बिछड़े... कहां आ के मिले!'

प्रकाश पुरोहित

राज्य मुंबई में जयप्रकाश चौकसे (सर) के घर पर रुका था। वेस्टइंडीज में वनडे-विश्वकप (2007) के लिए मुझे लंदन होते हुए जमैका जाना था। इंग्लैंड से ट्रांजिट वीसा नहीं मिल रहा था, इस वजह से मुझे मुंबई में रुकना पड़ा। उस रात भारत और बांग्लादेश का मैच था। भारत ने पहले खेलते हुए पूरे पचास ओवर नहीं खेले थे और सभी विकेट खोकर कुल जमा 191 रन बनाए थे। तभी चौकसेजी के फोन की घंटी बजी। उधर से सलीम (जावेद) बोल रहे थे कि भारत यह मैच जीत जाएगा। ये रन भी कम नहीं हैं, जबकि कुछ देर पहले ही हम इस बारे में बात कर रहे थे। सर ने सलीम को बताया कि मेरे दोस्त वेस्टइंडीज जा रहे हैं, उनका कहना है कि यह मैच हम हार रहे हैं। सलीम ने कहा 'जरा मेरी बात कराओ उनसे।' मुझे फोन दे दिया 'सलीम साहब बात करेंगे।'

'मुझे तो लग रहा है कि यह मैच हम जीत जाएंगे।' उधर से आवाज़ आई। 'गेंद टप्पा खाने के बाद धीमी हो रही थी, इसलिए हमसे रन नहीं बने, जबकि अब मौसम खुल गया है तो मुझे लगता है गेंद हरकत नहीं करेगी और बांग्लादेश आसानी से जीत जाएगा।' मैंने अपनी राय बताई। सलीम सहमत नहीं थे। हम काफी देर बात करते रहे, जबकि हमारा कोई पहले से परिचय नहीं था। 'चलिए, देखते हैं, किसका अंदाज़ सही बैठता है...' कहते हुए फोन बंद हो गया।

देर रात फिर फोन बजा। तब तक भारत मैच हार चुका था। उधर से सलीम बोल रहे थे 'अरे, वो आपके दोस्त हैं ना, उन्हें लेकर कल घर आ जाइए, लंच हम साथ ही लेंगे।' चौकसेजी ने मुझे बताया। मेरी देर रात की फ्लाइट थी तो कोई दिक्कत भी नहीं थी, पूरा दिन खाली था। सुबह हम तय समय पर सलीम साहब के सामने थे। जब पता चला कि मैं इंदौर से हूं और क्रिश्चियन कॉलेज से पढ़ा हूं तो बस बातों का सिलसिला यूं बहा कि कब चार घंटे गुजर गए, पता ही नहीं चला। पहले यह तय था कि किसी होटल में लंच लेंगे... लेकिन बातों का ओर-छोर ही नहीं मिल रहा था तो सुहैल खान ने घर पर ही लंच का इंतजाम करवा दिया। इस बीच उन्होंने हेलन को भी बुलवा लिया लंच पर। अरबाज और बाकी बच्चे तो थे ही, सलमान के अलावा। क्रिकेट, इंदौर, सिनेमा और ना जाने कितने विषय थे हमारी बातों के। तब उन्होंने कहा था 'किसी भी व्यक्ति को पहचानने का सबसे आसान और बेहतर तरीका यही है कि यह जानो, उसके साथ काम करने वाले कितने पुराने हैं। जो लोगों को ज्यादा समय अपने साथ रखता हो, मान लो वह अच्छा आदमी है।' मुझे याद आया, सलीम साहब ने

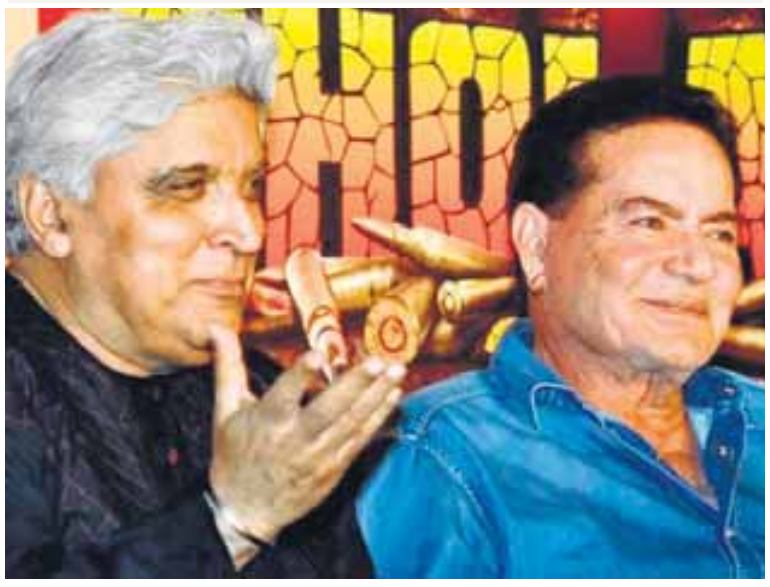

हम (वाकई) साथ-साथ हैं...

जावेद का साथ नहीं छोड़ा था, जावेद ने छोड़ा था, लेकिन उन्होंने कभी भी इस रिश्ते के खिलाफ कुछ नहीं बोला। साथ नहीं रहे, लेकिन रिश्तों को खराब नहीं होने दिया।

मैंने हिम्मत करते हुए सलीम-जावेद के अलग होने की वजह पूछ ली। उनके चेहरे पर तकलीफ की जैसे लहर-सी गुजर गई। कहने लगे 'यह हमारा नियम-सा हो गया था कि रोज सुबह जावेद के घर जाऊंगा, वहीं नाश्ता करूंगा, फिर दोपहर बाद तक बातें करेंगे या काम करेंगे और फिर घर आ जाऊंगा। एक रोज जब जावेद के घर की घंटी बजाई तो शबाना आजमी ने दरवाजा खोला और कहा उनकी तबीयत ठीक नहीं है, आज नहीं मिल सकेंगे। बस, यहीं से माथा ठनक गया था कि अब हमारी जोड़ी टूटने वाली है। घर आकर मैंने बता भी दिया था। फिर इस बारे में हमारी कोई बात नहीं हुई, उन्होंने इशारे से समझा दिया था और मैं भी समझ गया था।'

कुछ दिन बाद इंदौर में ही जावेद अख्तर से बात करते हुए यही सवाल किया था तो उनका निहायत बोदा-सा जवाब आया था 'एक गीत लिखने के जितने पैसे मिलते हैं, उतने पूरी पटकथा, संवाद या कहानी लिखने के भी नहीं मिलते हैं, तो कम लिख कर ज्यादा पैसे मिल रहे हैं तो सोचा क्यों फालतू लिखना।' यहां मुझे कादंबिनी के संपादक राजेंद्र अवस्थी का जवाब भी याद आया। उन्होंने कविता छोड़ कहानी शुरू की थी (ये कोई 1974 की बात है)। इंदौर आए थे तो मैंने पूछ लिया था कि कविता से कहानी... कैसे? उनका जवाब था 'कविता में पैसे कम मिलते हैं और कहानी में ज्यादा।' यानी यह तो समझ आ गया था कि कारण पैसा नहीं है और ही कुछ वजह है। सिर्फ पैसे के लिए कोई अपनी विधा तो बदल नहीं देता। यह कहना ठीक वैसा ही है, जैसे कभी पंडित जसराज ने तबला छोड़ कर गाने का फैसला किया था कि किसी ने 'मरी खाल का बजाने वाला' कह दिया था उन्हें।

ये बातें आज इसलिए याद आ रही हैं कि फिर से सलीम-जावेद के साथ होने की खबर हवा में हैं। प्राइम वीडियो पर उनके अच्छे दिनों की बात करती डाक्यूमेंट्री 'एंग्री यंग मैन' भी रिलीज हो गई है। चूंकि घर का ही प्रोडक्शन है तो मीठा-मीठा गप्प ही है। जिन लोगों ने अस्सी के दौर के जावेद को देखा है और अब जो बदला अवतार देख रहे हैं, उन्हें तो समझने में मुश्किल नहीं आएगी कि कायाकल्प ही नहीं, विचार-कल्प भी हुआ है। तब जावेद इतने बबुआ बने नहीं घूमते थे और ना ही उनके आसपास गुलज़ाराना आभामंडल ही बना था। करीने से काढ़े बाल, सलीके का रंगीन कुर्ता-पाजामा और जूतियां! हर समय चकापक!

यह बदलाव किस वजह से आया, इसके लिए जावेद की ग़ज़ल का शेर जरूर याद आता है 'आप से मिल के हम कुछ बदल से गए...!' अंदाज लगाते हैं कि उसी का नतीजा रहा कि उस दौर की लेखक जोड़ी इस तरह बिछड़ गई। जावेद हर तरह से बदले, लेकिन सलीम जैसे थे, वैसे ही रहे और इसी कारण फिर से दोनों के एक होने की खबर पर भरोसा करने का मन होने लगता है!

नज़्मों के पंख लगा कर उड़ रही थी अमृता

और क्या कह रही है जिंदगी

ममता तिवारी

लेखिका साहित्यकार हैं।

मैं

एक घोंसला घर
जहाँ न कोई ताला, न दरवाजा
न किसी रिश्ते का बंधन
न किसी कानून का दखल
न कोई सवाल और ना ही कोई शर्त
कविता की तरह खुलेपन के भी पंख होते
मैं तेरा घोंसला-घर सदा खुला
खुले आकाश में
तुम कविता की तरह उड़ना जानती
और उड़कर कहाँ जाना, यह भी जानती
मेरा घोंसला-घर मेरे जितना

अमृता आज़ाद थी, नज़्मों के पंख लगा कर उड़ रही थी। बल्गारिया में इन्होंने डायरी लिखी और नज़्में भी पढ़ी। सांस्कृतिक वाइस प्रेसिडेंट से मुलाकात, साहित्यकारों के घरो को देखा, पलोवदिव कस्बों में प्रिंटिंग मशीन जिस पर दासता के विरूद्ध साहित्य छपा करता था। ''अंडर द योक'' बल्गारिया का प्रसिद्ध नॉवेल है जिसमें नायिका का नाम राधा था। डोरा गावे नाम की महिला कवि ने इंदिरा गांधी के नाम टोस्ट किया। मास्को यूनिर्वसिटी उन्हें परी महल की तरह लगी, तो जॉजिया में वहाँ के प्यारे कवि का आठ सौ साला जश्न मनाया जा रहा था। वियतनाम के कवि से मिलकर अमृता के दिल से दुआ निकली। रोमानिया, म्यूनिख जाने कहाँ कहाँ साहित्य का बोलबाला था लोग एक दूसरे के देश के कवियों से मिलते थे उनकी कवितायें पढ़ते थे। अचानक भारत में अशोका होटल से फोन आता है पाकिस्तान सुलह के डेलीगेशन का एक मेम्बर बोल रहा हूँ वो व्यक्ति सज्जाद का ख़त और एक किताब लेकर आ रहा था अरे सज्जाद हैदर से आपको मिलवाया ही नहीं अमृता का सबसे करीबी दोस्त। फिर अमृता की मुलाकात होती है रवींद्रनाथ ठाकुर से, वो अमृता की कविता सुनते हैं बाद में अमृता ने रवींद्रनाथ जी पर कविता लिखी।

''यात्री'' उपन्यास 1968 में लिखा था उसकी पात्र सुंदरा कल्पित थी पर उसे भी अमृता ने जिया, महंत किरपा सागर का अंश उन्होंने पिता के साधु मित्र से लिया। ऐसा लगता है उनकी कहानी के पात्र उनके चारों ओर घूमते थे कहते थे हमें अक्षर समझ सफ़हे पर उतारो। ''जेबकतरे'' नीना कई पात्र उनसे ख़्वाबों में लड़ते थे।

जब अमृता के बच्चे बड़े होने लगे तो उनका बेटा शैली (नवराज) कुछ ख़फ़ा सा रहता था उसने कहा आपने अपनी ज़िंदगी को नया मोड़ दिया, पर क्या आप जानती हैं हम दोनों बच्चों ने इसके लिये कितना मैन्टली सफर किया। घर टूटता है तो मासूम बच्चे टूटते हुये घर के कंकरों को किस तरह अपने शरीर पर झेलते हैं इसकी पीड़ा मन में थी। बेटी अमृता को समझती थी उसने कहा मामा आप बहुत ना सोचें शैली बड़ा हो जायेगा तो समझ जायेगा। अमृता को सूरज के डूबने पर बड़ा ऐतराज था बचपन में वो रोने लग जाती थी। अमृता को अपने पिता की सीखें बहुत अच्छे से याद हैं। 1836 की बात है जब मेरी पहली किताब छपी थी महाराजा कपूरथला ने बुजुगीना प्यार देते हुये दो सौ रूपये भेजे। थोड़े दिन बाद महारानी नाभा ने एक साड़ी भेजी दोनों चीज़ें डाक से आई थी। डाकिए ने ज्यों दरवाजा खटखटाया मेरे मुँह से निकला आज फिर कोई ईमान आया है शरीर के कम्पन के साथ पिता के माथे पर पड़ी त्योंरी उन्हें याद रह गई मेरा जैसा व्यक्तित्व वो देखना चाहते थे उसमें मैं छोटी हो गई थी।

एक वाकया अमृता जी बताती हैं विवाह की रात वो अचानक छत पर जाकर रोती रही पिता को मालूम था मैं कहाँ हूँ अमृता ने मिन्नतें की उन्हें विवाह नहीं करना पर ऐसा हो न सका।

इंदिरा जी पर फिल्म बन रही थी बासु भट्टाचार्य बना रहे थे अमृता रचनात्मक किया लिख रही थी बासु दा ने कहा आप धोती के पल्ले से नेहरू जी और मोती लाल जी की तस्वीरों की धूल पोंछेंगी इंदिरा जी ने ''नहीं'' कहा कि मैं डस्टर लेकर पोंछ सकती हूँ पर धोती के पल्ले से नहीं, ठीक भी था जो उनके भीतर में नहीं है वह किसी शॉट में नहीं आना चाहिये। अमृता ने पूछा था आपके औरत होने से लोगों ने आपके काम में रूकावट पैदा की। उनका जवाब था मैंने इस बात पर गौर नहीं किया मैंने अपने आपको हमेशा इंसान समझा है अमृता का भी यही दृष्टिकोण था।

साहिर और कोरा कागज़

छब्बीसअक्टूबर की रात दो बजे फोन आता है कि साहिर नहीं रहे। बीस दिन पहले अमृता बल्गारिया में थी तब डॉक्टर ने अमृता से कहा था दिल का खतरा है दिल्ली में एशियन राइटर्स कांफ्रेंस हुई साहिर ने अपना बैज उतारकर मुझे लगा दिया और मेरा उतारकर खुद पहन लिया। अमृता को लगा मौत ने गलत बैज देखकर

अमृता को छोड़ दिया। कितनी गहराई से सोच कर उन्होंने तार जोड़े। फिर वही वाकया लिखा है दरअसल हमारे मित्र त्यागी जी ने पहले पार्ट को सुनकर कहा था कि मैं कुछ बातें दुहरा रही हूँ। दरअसल ये मैं नहीं हूँ कमोबेश हर उपन्यास में अमृता ने अपने बचपन, साहिर की, माँ, पिता के खूवाब की दास्तां दोहराई है।

1983 में शिरोमणि गुरूद्वारा प्रबंधक कमेटी का नोटिस आया कि मैंने जो नज़्में गुरू नानक के जन्म पर उनकी माँ तृप्ता के नौ सपनों की सूरत में लिखी है उससे धर्म की तौहीन हुई। रात ही उन्हें नानक सपने में दिखे और मुकदमा वापस ले लिया गया फिर उन्हें जबलपुर, शांति निकेतन से डी लिट् मिली। एक किताब अमृता ने ''लाल धागे का रिश्ता'' सिर्फ सपनों पर लिखी है।

मैंने सारा शगुफ्ता को पढ़ा है जितनी दर्दनाक उनकी ज़िंदगी थी उतनी दर्दनाक उनकी नज़्म वो पाकिस्तान में रहती थी अमृता की बहुत अच्छी दोस्त थी। 4 या 5 मई को उन्होंने आत्म हत्या कर ली वह कहती थी मैं तो हाथों से गिरी दुआ हूँ या मैं आसमान बेचकर चांद नहीं कमाती। ऐसा अमृता की दोस्त ही लिख सकती थी। दस मई को अमृता को राज्यसभा सांसद बनाया गया। बेबाकी से उन्होंने अदब और दहजीब के नाम पर सरकार द्वारा दी जाने वाली जमीन गलत हाथों में जाने पर सवाल उठाया फिर तो उन्होंने कई मंदिरों में महिलाओं का प्रवेश निषेध पर सवाल उठाये। यूनेस्को कांप्रेंस में उन्होंने मज़हब नाम बदलकर रूहानियत रखने का प्रस्ताव दिया जो मान लिया गया। अकसर अमृता अब कभी प्रसीडेंट या प्राइम मिनिस्टर के साथ डिनर पर रहती। इमरोज कहते तू गाड़ी में रोटी चाय रख दे और घंटों बैठे रहते। रसीदी टिकट में अमृता ने अपने सारे ज़ख़्म दिखा दिये। अमृता अब बीमार सी रहने लगी उनके साईं उन्हें सपने में इलाज बताते रहे। सुना था उन्हें मारने के लिये साजिश भी हो रही थी। इंद्रजीत का बदला नाम इमरोज उन्हें मुसलमान साबित कर रहा था इमरोज ने कहा ''अमृता तूने इस उदासी के पार जाना है। जो होता है होने दे कत्ल भी होता तो होने दे मैं तेरे साथ हूँ'' बाकी अमृता की दुनिया से जाने की, इमरोज की दुनिया में रहने की कहानी ''उमा त्रिलोक'' जी से सुनेंगे।

अमृता इमरोज का ''खतों का सफरनामा'' है जिसको संपादन ''उमा'' जी ने किया है। आप इस पुस्तक को स्वयं पढ़ियेगा भाव विभोर हो जायेंगे।

ये कहानी इश्क-ए-हक़ीकी की है और अमृता एक कवियत्री जिसने अपने सशक्त लेखन, अपनी अदायगी और अपने रहन सहन से सारे पंजाब को ही नहीं बल्कि उसके परे भी सभी को हिला कर रख दिया और एक कलाकार जिसने रिश्तों की रूह के अलग अलग पहलुओं को कैनवास पर उतारा। पूरा जीवन किस्से कहानियों से भरा है। उमा ली अमृता की फैन थी उनका परिचय कुछ यूँ है कई उठापटक के बाद उन्हें अमृता जी का साथ हासिल हुआ दोस्ती ने उसे अमृता में बदल दिया। अमृता का घर इमरोज ने रंगों से भर दिया था। वे अमृता को माजा बुलाते हैं। अमृता इमरोज चालीस साल से साथ रह रहे हैं हमेशा उनके इर्द गिर्द रहते हैं अमृता का स्वास्थ्य ठीक नहीं है लैंप शेडो पर कवितायें शेर लिखे हैं। उमा जी उनकी दर्द, तकलीफ देख नेचुरोपैथ के पास ले जाती हैं।

दर्द तुम्हारा सलामत रहे
ना जाने आशीष है ये या कि अभिशाप
दो लाइनें और हैं उनकी
एक दर्द था
जो सिगरेट की तरह मैंने चुपचाप पिया
सिर्फ कुछ नज़्में हैं
जो सिगरेट से राख की तरह मैंने झाड़ी है

नेचुरोपैथी से उन्हें ज़्यादा फायदा नहीं हुआ पर उमा जी को प्राणिक हीलिंग आती थी उससे उन्हें फायदा हुआ अब वो रोज आने लगी अमृता जी ने बताया था कि उन्होंने इमरोज से कहा था तुम अभी जवान हो कहीं जाकर बस जाओ। इमरोज ने कहा मैं तुम्हारे बगैर मरना नहीं चाहता। अमृता ने कहा तुम पहले दुनियों क्यों नहीं घूम आते। इमरोज उठे उनके कमरे के तीन चक्कर लगाये और कहा लो मैं दुनिया देख आया। एक दिन पेंटिंग बनाते समय अमृता वहीं खड़ी थी इमरोज़ ने ब्रश से, लाल रंग से उनके माथे पर बिंदी की मुहर लगा दी। अमृता जी को लोगों ने बहुत समझाया उन्हें जिसके साथ रहना है रहें पर दुनिया से नाता ना तोड़े। कौन बताये कि उन्हें दुनिया की क्या परवाह। 20 साल जिस पेंटर की पीठ के सपने उन्होंने देखे। आज वो उनके साथ थे। दुनिया की नज़र में अमृता जी ने धर्म विरोधी काम किया।हमें बल्गारिया में लिखी उनकी डायरी भी मिली। फिर हंगरी, रोमानिया, फ्रॅंकफर्ट, म्यूनिख, मैसीडोनिया, युगोस्लाविया, काहिरा सब जगह उनकी नज़्म थी, मुहब्बत थी। बीच में कुछ कविता को लेकर धार्मिक लोगों ने बुरा मान लिया।

इसी बीच समंदर में कितना पानी बह गया दांये से बांये किताबों के पन्ने आ गये अमृता रचती रही इमरोज के अंतिम दिनों में उनकी खास दोस्त उमा त्रिलोक जी ने लिखी है। अभी तलक जो भी लिखा गया उनमें अमृता के व्यक्तिगत जीवन और रचनाओं पर लिखा गया। उमा जी ने अमृता के इस सफ़र में इमरोज को शामिल करके रखा है, बेशर्त प्यार, बेपनाह मुहब्बत और केयर का तो कहना क्या। यह एक लेखिका और कलाकार की कहानी है। उमा जी कहती हैं एक लेखिका, उन्हें फुरसत नहीं थी वो उन पत्रों को फिर पढ़े कहने को उनके पास बहुत था उन्होंने इन उपन्यासों में अक्षर डाले यूँ तो किताबों का भंडार है क्योंकि सारे अक्षर उनके ईश्वर ने दरियादिली से उनकी झोली में डाले। कुछ चुनिंदा (सब की बात करूँगी तो महीनों निकल जायेंगे) उपन्यास जो शुरूआती दौर में लिखे गये उनका ज़िक्र करना चाहूँगी। मैं इन उपन्यासों को तीन काल खंडो में बांटना चाहती हूँ शुरूआती दौर में पहली पुस्तक ''अक्षरों की अज़मत'' निकली। ये वहीं पुस्तकें है जिनको पढ़ने के बाद पाठक वर्ग दीवाना हुआ, मैं भी। इसमें साहिर तो था ही, इमरोज़ का आगमन हो रहा था ''अमृता की चुनी कवितायें'' (1982) जिसका आवरण इमरोज़ ने बनाया ये किताब उन्हीं को समर्पित थी

तेरा मिलना ऐसे होता है
जैसे हथेली पर कोई
एक वक़्त की रोज़ी रखता है

''उपचास दिन'' (1987) ये एक उपन्यास था उनकी भाषा इतनी सहज थी पाठक उसे अपनी कहानी समझ बैठता था। ''डॉक्टर देव'' (1988) अमृता का बेहद प्रसिद्ध उपन्यास था हर कोई दावा करता फिरता था वो ही डाक्टर देव है इमरोज़ भी उसी किताब को स्कूल में पढ़कर दीवाना हुये थे। ''रसीदी टिकट'' (1988) अमृता की आत्मकथा है मुझे लगता है सबसे पहले इसी उपन्यास को पढ़ा जाना चाहिये। इसी पुस्तक से

तुम्हारी आंखों में
सांझ भी भोर भी
तुम्हारी सुगंध, जैसे सांझ की आंधी
तुम्हारे होंठ दारू का एक घूंट
तुम्हार मुख एक जाम
जलावतन (1989),
तेरे इश्क की इक बूंद
इसमें मिल गई थी
इसलिये मैंने उम्र की सारी
कड़वाहट पी ली

''नीना'' (1989) इस उपन्यास ने मुझ पर जादू सा किया था मैंने नीना को सांसो में, जीवन में उतार लिया फिर आया उपन्यास ''दो खिड़कियाँ'' (1988) इसमें कहानियाँ थी और दुनिया के मशहूर नॉवलों के पात्र। ''एक थी अनीता'' (1989) एक और प्रसिद्ध भावपूर्ण उपन्यास जिसमें दो कहानियाँ भी हैं, जंगली बूटी, गुलियाना का खत ''जलते बुझते लोग'' (1992) तीन लघु उपन्यास का संस्करण, जलावतन, जेबकतरे, कच्ची सड़क

उठती जवानी की रगों में जाने क्या
क्या सुलगने लगता है, और जाने
खुदा, एक तकदीर जेहन से किस तरह
खेलने लगती है इसी का अनुमान उतर
आया है इन तीन उपन्यासों में
''प्रतिनिधि कवितायें'' (1983, 90)
इमरोज़ को समर्पित ये नज़्में हैं
सच तू..... सपना भी तू
गैर तू..... अपना भी तू
वाह सजन..... वाह सजन

''नागमणि'' का ऊपर का पेज फटा है पर मैंने इस उपन्यास को कई बार पढ़ा है तीन बरसों में। ''एक मुट्ठी अक्षर'' जो ''यह सच है'' के नाम से छपा था। ''कच्चें रेशम की लड़की'' (1993) जिसमें छोटी कहानियाँ हैं वो कहती है'' मेरी कहानियों में जो भी किरदार है वा सभी किरदार ज़िंदगी से लिये हुये हैं लेकिन वह लोग जो यथार्थ और यथार्थ का फासला तय करना जानते हैं। ''तेहरवाँ सूरज'' (1995 में तीसरा संस्करण) निकला। ''अक्षरों के साये'' आत्मकथा है (1999) में निकली जिसका ज़िक्र मैंने किया था। यूँ तो, पिंजर, कोरे कागज़, उपचास दिन, दिल्ली की गलियाँ, तो ये थे चंद उपन्यास जो लगभग सभी ने पढ़े होंगे अभी ''रसीदी टिकट'' से उनके आत्मकथा के कुछ अंश बाकी है। फिर हम उनका आध्यात्मिक चिंतन पढ़ेंगे। फिर इमरोज़ की नज़र से अमृता को देखेंगे भी पढ़ेंगे भी। अंत में ''उमा त्रिलोक'' जी से अमृता के जीवन के अंतिम दिनों के बारे में जानेंगे। तब तक के लिये यही कह रही है ज़िंदगी

अन्नदाता! मेरी ज़बान और इनकार
यह कैसे हो सकता है!
हाँ..... प्यार..... यह तेरे मतलब की शै नहीं।

रस्म-अदायगी के इस दौर में...!

❐ यूके से प्रज्ञा मिश्रा

'कल पंद्रह अगस्त है। स्कूल कितने बजे जाना है?' इस सवाल पर जवाब आया कि स्कूल की छुट्टी है, क्योंकि स्कूल में पंद्रह अगस्त दो दिन पहले ही मना लिया। यह सुन कर स्कूल के दिन याद आ गए, जब हम भले ही हफ्ते में स्कूल से तड़ी मार जाएं, लेकिन पंद्रह अगस्त और छब्बीस जनवरी को स्कूल जाना ही है। सुबह-सुबह स्कूल जाकर, देशभक्ति के गीत गाकर, बुरा और बोर भाषण सुन और लड्डू-नमकीन का नाश्ता कर घर लौटने के सुख सुख से यह पूरी पीढ़ी ही दूर है।

इन दो दिनों में स्कूल जाने का उत्साह होता था। उस सुबह में कुछ तो बात होती थी, जो यूं खुशी-खुशी तैयार होकर स्कूल पहुंच जाते थे, सुबह से ही देश भक्ति के गाने रेडियो पर बज रहे होते थे और माहौल बन जाता होगा। वरुण ग्रोवर की फिल्म है **'ऑल इंडिया रैंक'**, जिसमें पंद्रह अगस्त के केक में तिरंगा उलटा बन कर आ जाता है और इसी से उनकी नौकरी

चली जाती है, जिन्होंने केक का आर्डर दिया था। हमारे स्कूल में केक का सपना भी नहीं था। वहां तो पॉलीथिन में लड्डू मिल जाना बड़ी बात थी। हां कितने लड्डू फूटे और कितने कम पड़े, इन पर कभी किसी को सजा मिली हो याद नहीं। लंदन में एक-दो बार पंद्रह अगस्त को अलग-अलग शहरों में मनाया और यह जाना कि 'जन गण मन' गाते हुए आज भी रोंगटे खड़े हो जाते हैं और अब तो न जाने क्यों गला रुंध जाता है और आंखें भर आती हैं। दो साल पहले भारत और पाकिस्तान ने साथ मनाया था और उसके बाद महसूस किया कि इससे बेहतर दूसरा रिवाज नहीं।

अपने देश का खिलाड़ी जब मैडल जीत जाता है तो उसकी जीत अपनी ही लगने लगती है, लेकिन फिर तूफान के बाद शांति हो जाती है। सही मायनों में देशप्रेम के गाने भी अब असर नहीं करते हैं।

सीरीज 'हीरामंडी' का गाना 'हमें देखनी है आज़ादी' कुछ हद तक कामयाब है। मौजूदा दौर में अब उस जज़्बे की सख्त जरूरत है, जब पूरा भारत एकजुट होकर आजादी का नगमा गुनगुना सके। 'मेरा भारत महान' नारा नहीं बल्कि हमारा भारत महान कह सके।